प्रथम अध्याय

मनोविज्ञान का स्वरुप एवं परिभाषा चरित्र का स्वरुप एवं परिभाषा

प्रथम अध्याय

१) भूमिका !

२) मनोविज्ञान का स्वरुप, परिभाषा एवं प्रकार !

३) साहित्य में मनोविज्ञान !

४) नारी मनोविज्ञान !

५) चरित्र का स्वरुप एवं परिभाषा !

६) नारी एवं उसका चरित्र !

७) नारी चरित्रों की विशेषताएँ !

भूमिका

"साहित्य की देदीत्यमान विधा ' उपन्यास ' अपनी चतुर्दिक उन्नति के कारण साहित्य मर्मज्ञो, लेखकों, पाठकों एवं आलोचको का प्रमुख आकर्षक केन्द्र रही है। आज यह हिन्दी साहित्य की सर्वश्रेष्ठ सशक्त तथा लोकप्रिय विधा के रुप में समाहत एवं प्रतिष्ठित है। वर्तमान संत्रासयुक्त तथा संघर्षशील मानव जीवन के जितने संवेदनशील, विश्वसनीय एवं वैविध्यपूर्ण चित्र उपन्यास विधा में सहजरुप में दृष्टिगोचर होते है। अपेक्षाकृत उतने अन्य किसी विधा में नहीं।

इसका मुख्य कारण है - उपन्यास का सुविस्तृत चित्रफलक प्रेमचन्द भी उपन्यास कों मानव जीवन का दर्पण ही स्वीकार करते है। वे लिखते है - में उपन्यास कों मानव चरित्र का चित्र मानता हूँ। मानव चरित्र पर प्रकाश डालना औंर उसके रहस्यों कों खोजना ही उपन्यास का मूल तत्व है। " उन्होने अन्यत्र कहा है - " उपन्यास में विषय का विस्तार मानव चरित्र सें किसी प्रकार कम नहीं है,उसका संबंध अपने चरित्र कें कर्म और विचार, उनके देवत्व और पशुत्व उनके उत्कर्ष-अपकर्ष सें है। मनोभाव कें विभिन्न रुप औंर भिन्न-भिन्न दशाओं में उनका विकास उपन्यास का मुख्य विषय है। धरित्री से लेकर अंतरिक्ष तक जहां-जहां मानव ने अपने पग चिन्ह छोड़े हैं, उपन्यास ने भी वहां तक अपनी रचना सीमाओं का विस्तार सरलता सें कर लिया है। "1

" उपन्यास आधुनिक जीवन का गद्यमय आख्यान है। भारतीय वाउमय में इसके विभिन्न अर्थ है - जैसे " पास रखी हुई धरोहर " पवित्र विचार वचन कों प्रस्तुत करने का ढंग और अनेकानेक अर्थो में यह प्रयुक्त हुआ है। इस प्रकार भारतीय साहित्य में इसकी व्युत्पत्ति द्वारा इसके सहीं अभिप्राय कों समझ लिया गया है। इसकी व्युत्पत्ति में मानव जीवन शब्द छुपा हुआ है। उपन्यास में यथार्थ जीवन का चित्रण होता है, इसलिए वह मानव जीवन की निकटतम विधा है। यह एक महत्वपूर्ण विधा है। इसलिए इसे मानव जीवन की धरोहर या अमानत मानना चाहिये। उपन्यास मानव जीवन कें प्रति एक निश्चित दर्शन, उद्देश्य या लक्ष्य को लेकर चलता है,और उसे अपनी कहानी कें द्वारा प्रमाणित करता है।

उपन्यास को परिभाषित करना - शब्दों के फूलपाश में बाँधना एक दुष्कर कार्य है। उपन्यास के शीर्षस्थ आलोचक इस कार्य में असफल रहें है। एक अंग्रेजी कोष के अनुसार उपन्यास वर्णात्मक काल्पनिक गद्य कथा है, जिसकी यथेष्ठ लम्बाई है (जो एक या अधिक खण्ड में समा जाए) और उसके चरित्र और कार्य यर्थाथ जीवन का प्रतिनिधित्व करते है और वें एक सें अधिक या कम जटिल वस्तु में गुंथे होते है। उपन्यास एक गतिशील विधा है, इसका लगातार विकास होता रहा है।

विषय - वस्तु और शिल्प की दृष्टि सें उपन्यास ने परंपरागत उपन्यास सें प्रयोगवादी उपन्यास औंर घटना प्रधान उपन्यास से मनोवैज्ञानिक उपन्यास तक की यात्रा की है।

उपन्यास जीवन की संवेगात्मक अभिव्यक्ति है। जीवन पथ पर अनेकानेक पात्रो का वृत उपन्यासकार प्रस्तुत करता है।

वह पात्रो कें चित्रण में, कालक्रम में, जड़ अनुसरण न कर पात्रो की संवेदनाओं और उनके स्पंदन कों प्रत्यक्ष करता है। उपन्यासकार जीवन का फोटोग्राफिक प्रतिनिधित्व न कर, एक दृष्टि को अभिव्यक्त करता है, जो यथार्थ की अपेक्षा पूर्ण है, विस्तृत है,और अधिक सत्य है। उपन्यासकार जीवन की अभिव्यक्ति, आलोचना, व्याख्या औंर टिप्पणी प्रस्तुत करता है। उपन्यास जीवन का सहीं रुपान्तर न होकर सरलीकरण है। उपन्यास जीवन की अलोचना औंर उसका मूल्यांकन है। इसमें जिन्दगी प्रकट ही नहीं होती, एक शक्तिशाली प्रकाश कें नीचे जीवन की आलोचना औंर उसका मूल्यांकन होता है। वस्तुत: उपन्यासकार यथार्थ का दिग्भ्रम उपस्थित करता है। उपन्यासकार कल्पना के सहारे एक नई दुनिया को खोलकर रखता है। औंर यह दुनिया दिग्भ्रम का तर्जन करती है। उपन्यास जीवन का कलात्मक सर्जन है व आधुनिक जीवन का गद्यमय महाकाव्य है। उपन्यास को बुर्जुआ समाज का महाकाव्य कहा गया है। उपन्यास एक ऐसी विधा है, जिसमें व्यापकता कें साथ गहराई है। विकास काल में ही उपन्यास ने मानव जीवन कें ऐसे मर्मसूत्र को पकड़ा था, जिसमें उसका सारा वैयक्तिक अस्तित्व, सामाजिक जीवन औंर सांस्कृतिक विकास, अंतर ग्रसित था, वह थी मनुष्य की आत्मान्वेषी-वृत्ति जिसकी आरंभ रेखा थी- जिजीविषा औंर परिणति थी,आत्मोपलब्धि एक ओर उपन्यास ने सामाजिक यथार्थ कें अनेक चित्र प्रस्तुत किए तो दूसरी ओर व्यक्ति कें चेतन, उपचेतन, और अवचेतन मन की ग्रंथियों कों सुलझाने में व्यस्त हो गया।"[2]

" आज की संकटाकुल आर्थिक, समाजिक, राजनीतिक, और मनोवैज्ञानिक परिस्थितियों में जीवन संघर्षपूर्ण औंर उलझनमय हो गया है। आज का युग राष्ट्रीय सीमांए पार कर अंर्तराष्ट्रीय क्षेत्र में पदार्पण कर रहा है, उपभोक्तावादी संस्कृति का बोलबाला है, मानव सभ्यता समाज में परिवर्तित विचारधाराओं से प्रभावित हो रही है। मानव धर्म कें ऊपर जाति धर्म छाता जा रहा है, प्रतिभा एवं व्यक्तित्व कें स्थान पर धन एवं पद का सम्मान हो रहा है, ऐसी स्थिति में उपन्यास ही जन साधारण की कथा और व्यथा कों निर्मम सच्चाई कें साथ पूर्णता सें अभिव्यक्त कर सकता है।"[3]

आज जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में बदलाव आया है। भौतिक और सांस्कृतिक जगत में तनाव आया है। परम्परागत मूल्य बिखराव की स्थिति में है, मान्यतायें बदल रही है , धारणायें टूट रही औरं मानदण्डो में टकराव है.यह काल संस्कृति का काल है, जहाँ पुराने मूल्यों का स्थान युगानुकूल नवीन मूल्यों ने ग्रहण कर लिया है। समाज में सर्वत्र संघर्ष व्याप्त है। जिसका परिणाम है - नवीन स्थापनाएँ, नये आदर्श, नये मूल्य, अर्थात नया समाज औरं इससे उपन्यास भी अछूता नहीं रहा। आज की महानगरीय सभ्यता में व्यक्ति कितना अकेला अजनबी और मिसफिट है,इसका बखूबी चित्रण इन उपन्यासो में है। वक्त कें साथ-साथ जिस तरह हम बदलते है, उसी तरह हमारे विचार भी बदलते है , हमारे सोचने का अंदाज बदल जाता है। उसी तरह आज के उपन्यास घटना प्रधान उपन्यास, प्रयोगवादी उपन्यास सें मनोवैज्ञानिक उपन्यास की यात्रा कर चुके है, कर रहें है। आधुनिक मनोविज्ञान व्यक्ति को विराट का अंश नहीं मानकर उसकी प्रवृत्तियों की उपलब्धि मानता है। मनोविज्ञान मनुष्य कों प्रतिक्रियात्मक प्राणी कें रुप में स्वीकार करता है। वह मनुष्य का व्यवहार उत्तेजना कें प्रति गहरी दिलचस्पी रखता है। मनोविज्ञान कें अनुसार मनुष्य का व्यवहार उत्तेजना और प्रतिक्रिया द्वारा निर्मित होता है। इसीलिए मनुष्य कें व्यक्तित्व कों सही पकड़ कें लिए उसकी उत्तेजनाओ और प्रतिक्रियाओ कों उसके सही परिवेश में देखना परखना होगा। मनुष्य वातावरण सें अभियोजित होने कें लिए सदा तत्पर रहता है। उसकी यह तत्परता एक सुसंगठित इकाई होती है।मानव कें विभिन्न अंगो का नियंत्रण मन करता है। इसीलिए विभिन्न अवयवों कें क्रिया संगठनों को मानसिक क्रिया कहा जाता है। "[4]

"डॉ.देवराज उपाध्याय का यह कथन ठीक है कि हमनें मनोवज्ञान कें साथ समझौता तो किया है, परन्तु अपनी भूमि की एक ईंच मिट्टी भी नहीं दी है। यह समझौता है,आत्मसमर्पण नहीं। "[5]

वैज्ञानिक युग में जब सें मानव कें सामाजिक मूल्यों में परिवर्तन हुआ है,तब से उपन्यासकार के कथानक निर्माण में भी परिवर्तन देखा परखा गया है। आज कें मनोवैज्ञानिक उपन्यासो की बात की जाए तो एक नारी कें जीवन में व्याप्त संत्रास, घुटन, प्रेममय भाव और व्यापार नारी मन की सच्चाई को ही हम पाऐंगे। नारी भगवान की ही अद्‌भूत कृति नहीं है , वरन् मानवों की भी अद्‌भूत सृष्टी है। मनुष्य निरंतर अपने अन्तरतम सें नारी कों सौन्दर्य की विभूति सें विभूषित करता है। कविगण स्वर्णिम कल्पना कें धागो सें उसके लिए एक जाल सा बुनते रहते है।

मानव हृदय की वासना ने सदैव नारी के यौवन को ऐश्वर्य प्रदान किया है। नारी अर्द्ध नारी है और अर्द्ध स्वप्न है।

"डॉ.हजारी प्रसाद द्विवेदी ने लिखा है- पुरुष नि:संग है, स्त्री आसग्त पुरुष निर्द्वन्द है , स्त्री द्धन्द्धोमुखी, पुरुष मुक्त है, स्त्री बद्ध।"6

आज उपन्यासो में नारी को लेकर कहीं नैतिकता के मानदण्ड बिखरते टूटते से लगते है। आज का उपन्यासकार कही हीनता की ग्रंथी से ग्रसित नारी पात्रों की अवतारणा कर रहा है। सच तो यह है,कि हिन्दी उपन्यास आज के व्यक्ति के रुग्ण मानसिक धरातल कों केन्द्र बनाकर चला है,और जीवन की विसंगतियों कों प्रस्तुत करने के लिए प्रयत्नशील है। सम्बन्धों की पवित्रता के प्रति आस्था और विश्वास टूट रहे है,और वैयक्तिक स्वतंत्रता की माँग जोरदार शब्दों में की जा रही है। आज का हिन्दी उपन्यास नारी जीवन की कुंठा ,संत्रास, भटकन-सबको समेटकर चल रहा है। इसमें कोई संदेह नहीं।

नारी का जीवन भी समाज में कम संघर्षशील नहीं रहा। उत्थान पतन के कितने दौरो से गुजरती हुई नारी आज वर्तमान में अपनी स्थिति तक पहुँच सकी है। साहित्यकार की भावना में प्रारम्भ सें ही नारी दो परस्पर विरोधी रुपो में विद्यमान रही है। एक तरफ उपन्यासकार उसे प्रेममयी, वात्सल्यमयी ममता से ओतप्रोत नारी के रुप में चित्रित करते तो दूसरी ओर वासना की भूखी नारी के रुप में चित्रित करते है। नारी की निंदात्मक और प्रंशसात्मक दोनो दशाओं का ही साहित्य में चित्रण हुआ। आज का हिन्दी उपन्यास संघर्षोन्मुख हो उठा है। वर्तमान मध्यवर्ग के संघर्ष की स्पष्ट छांया उसमें प्रतिबिम्बित हुई है। इधर अनेक स्त्री लेखिकाएँ भी उपन्यास लेखन की ओर प्रवृत हुई है। औंर सच ही है , आज नारी अपने स्वतंत्र अस्तित्व कों पहचानने लगी है, अपितु उसे स्थापित भी करने लगी है। नारी के जीवन में प्रेम की अनुभूति उसके केन्द्र में है,और इसकी अपनी सीमाएँ भी है। एक नारी कें जीवन में व्याप्त संत्राए, घुटन, त्रासदी, प्रेममय भाव औंर व्यापार को नारी मन की अपेक्षा कौन अधिक सच्चाई सें प्रकट कर सकता है ?

"कदाचित इसी कारण आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने नारियों कें विषय कों चुनाव संगत बतलाते हुए कहा है- यह विचित्र बात है, कि स्त्री जब साहित्य लिखती है,स्त्रियों के सम्बन्ध में ही लिखती है , और पुरुष जब साहित्य लिखता है,तब भी स्त्रियों कें सबंध में ही लिखता है।दोनो में अंतर यह होता है,कि स्त्री कें लिखने का उद्देश्य है अपने विषय में फैले हुए भ्रम का निराकरण और पुरुष का उद्देश्य है उसके विषय में और भी भ्रम पैदा करना। महिला उपन्यासकारों का लेखन चुनने के पीछे यह भाव प्रमुख रुप सें रहा है- " जाके पांव न फटी बिवाई वो क्या जाने पीर पराई " पुरुष उपन्यासकारों की अपेक्षा नारी मन कें चित्रण में महिलाये

ही अधिक समर्थ सिद्ध हो सकी है।"[१] इसीलिए मैने अपने शोध प्रबंध के चयन में एक महिला लेखिका को चुना एवं शोध प्रबंध के विषय में भी नारी चरित्रों के मनोविज्ञान को लिया है क्योंकि नारी जीवन के भीतर उत्पन्न होने वाली मनोवैज्ञानिक समस्या कों एक नारी ही भली भाँति समझ पाती है। चूंकि मेरा विषय ऐसा नहीं है,जिसमें भारतीय नारी के पूरे जीवन के परिदृश्य में देखा जाय इसलिए मेरी समस्या उनके सामाजिक स्त्रोतो की खोज नहीं है,केवल समाजिक परिप्रेक्ष्य में बनने वाली मानसिक कुंठाओ के विश्लेषण की है। मेरी समस्या मनोवैज्ञानिक उपन्यासो में नारी के अस्तित्व,सम्बन्ध,मानसिक बद्धता की व्याख्या की है। नारी कें मानस पटल पर चल रहे मानसिक द्वन्द से उपन्यासकार कैसे साक्षात्कार कर पाते है,उसी का विश्लेषण मेरे शोध प्रबंध की केन्द्रीय समस्या है। ऐसी स्थिति में मेरे लिए यह आवश्यक है, कि पात्रो के मनोविश्लेषण कें साथ ही उनकी प्रेरक स्थितियों का भी विश्लेषण किया जाय। नारी पात्रों कें अचेतन और अर्द्धचेतन में झांककर उन रहस्यमय अभिप्रायो की खोज करना मेरे लिए आवश्यक है, जिसके बिना मनोविश्लेषण अधूरा समझा जाता है,अर्थात नारी पात्रों कों पूरी मानसिकता और भोग में देखना परखना ही मेरा मुख्य उद्देश्य है।

16.01

मनोविज्ञान का स्वरूप एवं परिभाषा

आज के उपन्यासो का हमारे जीवन के साथ कितना घनिष्ठ सम्बन्ध है। इस तथ्य से हम भली भाँति परिचित हो चुके है। हर उपन्यास हमारे जीवन की समस्याओं कों शब्दो में बांधे रखता है। जिसे पढ़कर हम कितनी समस्याओ का समाधान पा लेते है। ऐसी ही कथाकार आधुनिक युग में उभरी है। **मृदुला गर्ग** जिस तरह प्रेमचंद के उपन्यास " **गबन** " व **फणीश्वरनाथ रेण** का उपन्यास " **मैला आँचल**" ने उन्हें अमर बना दिया उसी प्रकार मृदुला गर्ग कें उपन्यास **उसके हिस्से की धुप, वंशज, चितकोबरा, कठ गुलाब** जैसे उपन्यास ने उन्हें आधुनिक कथा साहित्य में अग्रिम पंक्ति में प्रतिष्ठित कर दिया है। लेकिन उसके उपलक्ष मृदुला गर्ग के नारी चरित्रो का मनोविज्ञान पर किसी ने अभी तक दृष्टि नहीं डाली इस दिशा में उनके उपन्यास का मूल्यांकन कर उनके प्रदेय को व्यक्त करने का यह मेरा विनम्र प्रयास है। में नारी चरित्रो के मनोविज्ञान को जानने में रुचि रखती हूँ। गर्गजी ने अपने उपन्यास में नारी की समस्या कों अत्यन्त सूक्ष्म रुप में बताया जो मुझे काफी मर्मस्पर्शी लगा। इसलिए मेने अपना विषय "मृदुला गर्ग के उपन्यास में नारी चरित्रो का मनोविज्ञान" चुँना है। परन्तु मृदुलाजी के उपन्यास कें बारे में विस्तृत रुप प्रस्तुत करने सें पहले में यह बताना चाहूँगी की मनोविज्ञान क्या है, उसका स्वरुप कैसा है,एवं उसकी परिभाषा क्या है।

मनोविज्ञान का अभिप्राय मनोविश्लेषण

1. "**मनोहंस** - वार्णिक छन्दो में समवृत एक भेद। स ज ज भ र के योग सें यह वृत बनता है।(।।S,।S।,।S।,S।।,S।S) प्राकृत पगलम में इसका मनोहंस नाम दिया जाता है। परंतु किस कारण कैशव ने इस छंद का नाम कलहंस दिया है। (2:96) अत: संभव है, पहले मनोहंस का कलहंस नाम भूल से दिया गया हो।

उदाहरण- तहँ ताहि दै वरु कों चले रघुनाथ जू।

अति सूर सुन्दर यो लसै ऋषि साथ जू (रा, च:5:7)

इसी के अंन्तर्गत आता है - मनोग्रंथि, मानस की व्याख्या "7

2. "**मनोग्रंथि** - मनोग्रंथि किसी अशत: या पूर्णत: दमित संवेगावष्टि विचार या विचारो का पुंज होती है। जिनके साथ व्यक्ति कें द्वारा स्वीकृत अन्य विचारो का सतत् संघर्ष होता रहता है। मनोग्रंथि को दमित स्थाई भाव भी कहा जाता है। जिससे प्रेरित होकर व्यक्ति विचित्र व्यवहार करता है।

मनोग्रंथि अवचेतन को पराभूत करने वाला एक ऐसा विशिष्ट विचार होता है। जिसके आसपास दमित आदिम संवेगो की एक गुत्थी सी बन जाती है। मनोग्रंथियाँ चेतन, अचेतन, या कृचिच्चेतन किसी भी प्रकार की हो सकती है। किन्तु कुछ अधिकारी विद्वान मनोग्रंथि शब्द का प्रयोग अचेतन विचारो भावनाओ और प्रेरणाओ कें लिए ही करते है।"[8]

3. "**मानस** -इस शब्द सें विचारो संवेदनाओ, अनुभूतियों कें संघटन और आधार स्वरुप एक सत्ता का बोध होता है। सामान्य भाषा में जिसे हम मन कहते है। मानस उसी का साहित्यिक औंर मनोवैज्ञानिक दृष्टि सें परिष्कृत रुप कहा जा सकता है। इस सामान्य अर्थ में मानस शब्द का प्रयोग प्राचिन हिन्दी साहित्य में प्रचलित रहा है। परन्तु आधुनिक साहित्य में विशिष्ट मनोवैज्ञानिक अर्थ में इसका प्रयोग अधिक है। आरंभ में मानस का अर्थ बहुत आत्मा कें समान था,अर्थात वह अदृश्य, आचष्ट, चेतन सत्ता जों हमारे अनुभवों का आधार है,जो परमशुद्ध, चैतन्य स्वरुप है। इस अर्थ में मानस दार्शनिकों का विवेच्य विषय अधिक था। साहित्यिको और मनोवैज्ञानिको का कम मनोविश्लेषण कें प्रवर्तक फ्रायड कों खोजो सें यह सिद्ध हो गया कि,मानस कें कई पक्ष होते है। चेतन पक्ष उनमें से एक है। इससे हम सबसें अधिक परिचित भी होते है। पर मानस कें अन्य पक्ष भी है। जैसे अचेतन, अवचेतन या अद्धचेतन आदि ये सभी पक्ष किसी न किसी प्रकार मनुष्य कें व्यक्तित्व कों प्रभावित करते है। और उसके व्यवहार में व्यक्त होते है।"9

मनोविज्ञान का स्वरुप - "मनोविज्ञान कें स्वरुपकों देखा जाए तो यह स्वरुप मनोविज्ञान शब्द के शाब्दिक अर्थ से स्पष्ट नहीं होता है। Psychlogy शब्द की उत्पत्ति ग्रीक शब्दो Psyche और logos से हुई है Psychlogy= Psyche + logos) Poyche का अर्थ आत्मा से है।

Psyche का दूसरा अर्थ भी है - एक कँवारी कन्या जिसके तितली के समान पंख हो। logos का अर्थ है - ज्ञान अथवा बातचीत करना। यदि Psychology शब्द का शाब्दिक अर्थ लिया जाए तो इसका अर्थ है। आत्मा का ज्ञान ही मनोविज्ञान है। मनोविज्ञान का अर्थ - आत्मा अध्ययन परंतु कुछ विद्वान ने आत्मा कें स्थान पर मन शब्द कें उपयोग कों अधिक उपयुक्त बताया।

यदि आत्मा कें स्थान पर मन शब्द का प्रयोग करें तो कहा जा सकता है कि मन का ज्ञान ही मनोविज्ञान है। परंतु मन कें अनेक अर्थ है। मन का अर्थ आत्मा, चेतना तथा मानसिक प्रतिक्रियाएं है। अत: मन का स्वरुप क्या है, इस सम्बन्ध में मनोवैज्ञानिकों का मत एक न हो सका।"10

मनोविज्ञान शब्द का कोशागत अर्थ है- "मानव की आत्मा अथवा मन की प्रकृति, प्रकार्यो एवं परिदृश्य का विज्ञान"

(1)मन एवं मानसिक प्रक्रियाओ, अनुभवो , इच्छाओ इत्यादि से सम्बन्धित विज्ञान

(2) मानव अथवा पशु कें व्यवहार का विज्ञान।

मनोविज्ञान की विषय वस्तु सामान्यत: मानव व्यवहार अथवा अन्य आंगिक क्रियाएं है।

मनोविज्ञान मन की प्रकृति,वृतियों आदि का विवेचन करने वाला विज्ञान होता है,जिसके द्वारा यह जाना जाता है,की मनुष्य के चित में कौन सी वृति-कब, क्यों और किस प्रकार उत्पन्न होती है। चित की वृतियो की मीमांसा करने वाला शास्त्र।

मनोविज्ञान

वह विज्ञान या शास्त्र है,जिसमें मनुष्य कें मन, उसकी विभिन्न अवस्थाओं तथा क्रियाओ का उस पर पड़ने वाले प्रभावों आदि का अध्ययन एवं विवेचन होता है।"11

"मनोविज्ञान ' मन ' सम्बन्धि ज्ञान का प्रस्तोता है। मन अदृश्य, आचष्ट, अस्पृश्य, विवादास्पद और अनुमानित है। मन स्थिति का विश्लेषक- व्याख्याता मनुष्य का व्यवहार है। अत: मनोविज्ञान मनुष्य जीवन कें व्यवहार का विश्लेषक है। सृष्टि कें इतिहास में आदिम युग समाप्त होकर जब सभ्यता कें सँवरे चरण प्रथम बार धरती पर पड़े तब इस तथा कथित नवीनतम किन्तु वस्तुत: प्राचीनतम शास्त्रो मनोविज्ञान कों जन्म मिल गया। सुन्दरतम बुद्धिवादी मानव कें सुखमय सामाजिक जीवन की आकांक्षा वश पराचर विश्लेषण ने मनोविज्ञान की आधारशिला रखी।

व्यवहार विश्लेषण कि प्रक्रिया तब से गतिमान है। व्यवहार के कारणभूत मन का चिंतन भारत में ऋग्वेद तथा यूरोप में प्लेटो से ही प्रारंभ हो गया था। पर उन्नीसवीं शताब्दी तक उसका अध्ययन दर्शनपरक ही रहा। बींसवी सदी ने मनोविज्ञान ने मन-आत्मा की शब्द परिधी से निकलकर वस्तुत: एक विज्ञान का रुप ग्रहण किया। संरचनावादीयों ने मान्यता स्पष्ट की है कि मनोविज्ञान का विषय मन और आत्मा जैसा कोई पदार्थ नहीं, कार्यकारण नियमों के अनुसार होने वाली चेतन प्रक्रिया अथवा प्रत्यक्ष अनुभव है। मनोविज्ञान का काम इन अनुभवो के सरलतम रुपो का अध्ययन करना है। संरचनावाद कि प्रतिक्रिया के रुप में अवतीर्ण, प्रकार्यवाद के अुनसार मनोविज्ञान का कार्य मानसिक क्रियाओ के क्यों और कैसे रुप तथा उनकी उपयोगिता बताना है। समस्त मानसिक प्रक्रियाओ के आधार के रुप में वे मन और शरीर की एकता को देखते है। व्यवहारवादी वाटसन के मत में व्यवहार जिसका की निरीक्षण हो सकता है। मनोविज्ञान के अध्ययन का मुख्य विषय है,व्यवहार प्राणी की बाह्य उत्तेजना के प्रति अनुक्रिया है। मनोविज्ञान उत्तेजना प्रतिक्रिया का विज्ञान है।[12]"

"भारतीय विद्वानो में श्री अरविन्द ने स्वप्न का सम्बन्ध अवचेतन की गहन गूढ़ पर्तो से जोड़ा है। और इसके महत्व को मानसिक माना है। इस प्रकार धीरे-धीरे विद्वानो ने स्वप्न को भी एक मनोवैज्ञानिक तथ्य के रुप में स्वीकार किया है। मनोविज्ञान मनुष्य के मन के सब स्तरो का गहन अध्ययन करता है। स्वप्न का अध्ययन भी मनोविज्ञान का एक अंश है। अत: स्पष्ट है कि स्वप्न व्यक्ति के मन का अध्ययन करने वाला माध्यम है। धीरे-धीरे इस मनोविज्ञान ने साहित्य में प्रवेश किया तो स्वभावत: स्वप्न ने भी साहित्य में प्रवेश किया। सभ्यता के साथ-साथ मनुष्य का जीवन भी जटील होता गया पाठक अब स्वयं कों और साथ में अपने समाज को समझने की चेष्टा भी करना चाहता था। अत: उसकी मांग थी की उसे पढ़ने के लिए कोई ऐसी चीज मिलें जिसमें मात्र व्याख्या या किसी वस्तु का सतही वर्णन न होकर मन की अन्तरंग गुत्थियों और इन गुत्थियों के निर्मित होने के कारणों का वर्णन हो। फलस्वरुप लेखको ने भी चरित्र की मानसिक क्रियाओ प्रतिक्रिया का वर्णन किया"[13]। " मानस " की अतल गहराईयों को नापने लगे। इन लेखको का कहना है कि उनका लिखना किसी बाहरी उद्देश्यो की पूर्ति के लिए नहीं, अपने लिए है , अपने कों समझने के लिए, अपने को पाने के लिए इनका विश्वास है कि व्यक्ति अपने को समझने लगे, अपनी अवचेतन प्रवृतियो का वास्तविक स्वरुप पहचानने लगे तो उनकी भी सभी समस्याएं जो मुख्यत: मानसिक विकृतियों की उपज होती है।

अपने आप सुलझने लगेगी। इसलिए अपने उपन्यासो में वे व्यक्ति मानस की परत पर परत खोलकर व्यक्ति के अतीत विश्लेषण द्वारा उसकी वर्तमान कठिनाईयो की व्याख्या प्रस्तुत करते है। यद्यपि मानव मन की गुत्थियों को सुलझाने के लिए वे मनोविज्ञान की अधुनातन टेकनीको का सहारा पहले सें भी अधिक लेते है।इसी प्रकार बींसवी शताब्दी का मानव अपने को अपने ही बुने हुए जाल में जकड़ा पा रहा था। उस समय फ्रायड, ऐडलर, युंग, पवलोव और परेतो की मनोवैज्ञानिक विचारधाराओ में मनुष्य के एक ठोंस समाज विज्ञान देने की चेष्टा की किन्तु दुर्भाग्यवश उनसे मनुष्य कें भीतर छीपी हुई अज्ञात आदिम, बर्बर, और विकृत पाश्व वृतियो पर आधारित उनकी मानसिक कुरुपता का ही दिग्दर्शन हो सका।14"

इस प्रकार मनोविज्ञान सें हमारा अभिप्राय मानव मन का विज्ञान जिसमें विभिन्न परिस्थितियों के प्रति प्राणी के व्यवहारो या प्रत्युतरो - जैसे सभी प्रकार प्रतिक्रियाओ, समायोजन, अनुक्रियाओ और अभिव्यक्तियों आदि का अध्ययन किया जाता है, तथा साथ व्यवहार की अवस्था में उत्पन्न अनुभवो की चेतना का अध्ययन किया जाता है।

प्रथम मनोविज्ञान की परिभाषा

"मनोविज्ञान विकास के इतिहास में अध्ययन सें स्पष्ट होता है, कि प्रारम्भ से ही विज्ञान किसी न किसी रुप में प्राणी की क्रियाओ का अध्ययन करते है। प्राणी की चेतन क्रियाओ का अध्ययन किया गया,उसकी शारीरिक क्रियाओं और व्यवहारों का भी अध्ययन किया गया। बींसवी शताब्दी के आरम्भ सें ही मनोविज्ञान की परिभाषा व्यवहार कें विज्ञान के रुप में कि जाने लगी। " **मेक्डुगल ने मनोविज्ञान कि परिभाषा प्राणी की क्रियाओ और व्यवहारो के विज्ञान के रुप में की है।" मेक्डुगल ने अपनी समाज मनोविज्ञान की पुस्तक में मनोविज्ञान को परिभाषित करते हुए लिखा है, कि मनोविज्ञान व्यवहार का धनात्मक विज्ञान है "**

पिल्सबरी पिल्सबरी का विचार भी है, कि मनोविज्ञान की मानव व्यवहार कें रुप में परिभाषा संतोषजनक रुप में की जा सकती है। मनोविज्ञान कों व्यवहार कें विज्ञान कें रुप में परिभाषा इस समय से आज तक किसी न किसी रुप में मान्य है। उसकी मान्यता का मुख्य कारण यह है, कि व्यवहार में प्राणी की सभी प्रकार कि क्रियाएं आ जाती है।

मनोविज्ञान कि कुछ परिभाषाये निम्न प्रकार की है -

(1) **वुडवर्थ** (1954) - " वुडवर्थ के अनुसार व्यक्ति के पर्यावरण के सम्बन्ध में व्यक्ति की क्रियाओ का विज्ञान ही मनोविज्ञान है । "

(2) **मन** (1955) - " मनोविज्ञान आज व्यवहार की वैज्ञानिक जांच पड़ताल से सम्बन्धित है, जिसमें व्यवहार कें दृष्टिकोण सें वह सब सम्मिलित है । जिसे पहले कें मनोविज्ञानिक अनुभव कें रुप में लेते थे । "

(3) **स्किनर** (1956) - " जीवन की विभिन्न परिस्थितियों के प्रति प्राणी की प्रतिक्रियाओ या व्यवहार का अध्ययन ही मनोविज्ञान है । प्रतिक्रियाओ या व्यवहारो का अर्थ प्राणी की सभी प्रकार की प्रतिक्रियाओ, समायोजन कार्य व्यापारो और अभिव्यक्तियो से है ।"

(4) **बोरिंग** (1962) - " मनोविज्ञान व्यक्ति के प्रत्युतरो के फलस्वरुप उत्पन्न व्यवहार का अध्ययन करता है , और साथ ही साथ इस अवस्था में उत्पन्न अनुभवो की चेतना का भी अध्ययन करता है । "[15]

(5) **(जेम्स ड्रेवर)** - " मनोविज्ञान वह शुद्ध विज्ञान है,जो मानव तथा पशु के उस क्रिया कलाप का अध्ययन करता है । जो उसके मन: संसार में घटित होता है ।"

(6) **वाटसन** - " मनोविज्ञान प्रकृति विज्ञान कि शुद्ध वस्तुनिष्ठ प्रयोगात्मक शाखा है,उसका सेद्धांतिक उद्देश्य व्यवहार का नियंत्रण एवं संकेत करना है । "

(7)| **एम.रुजेन्यल-पी.युदीन** |-| " मनोविज्ञान व्यक्ति और वस्तु की अन्त: क्रियाओ के पक्षो का अध्ययन करने वाला विज्ञान है । व्यक्ति की मानसिक क्रियाशीलता , मानसिक उत्पत्तियों तथा अवस्थाओ का प्रतिपादक है । "

(8)| **नारमन एल.मन.** - " मनोविज्ञान प्राणीयों के कार्य- व्यापारो, कार्य-उत्पादनो अथवा भाषा और व्यवहार के विविध रुपो का वस्तुनिष्ठ अध्ययन करता है । यहाँ पर स्पष्ट कर देना आवश्यक है, कि बाह्य प्रतिवेदन या प्रतिक्रिया की साधारण भाषा में |" व्यवहार" कहा जाता है ।

विभिन्न इंद्रियाँ मनुष्यो का बाहरी परिवेश तथा परिस्थितियों सें सम्बन्ध स्थापित कराती है , और मन इस प्रकार अर्जित अनेक सम्बन्धों को व्यवस्थित करने के लिए आंन्तरिक क्रिया करता है । अत: मनुष्य के व्यवहारो के दो पक्ष होते है - एक बाहरी और भीतरी एक शारीरिक दूसरा मानसिक इन्हीं मानवीय व्यवहारो कें अध्ययन कों मनोविज्ञान कहते है ।"16

उपयुक्त विविध परिभाषाओ को देखकर मनोविज्ञान कें क्षेत्र की व्यापकता का पता चलता है। और इस कसौटी पर यह सभी परिभाषाएं एकपक्षीय प्रतीत होती है। क्योंकि मनोविज्ञान को परिभाषित करते समय प्राय: उपर्युक्त सभी मनोवैज्ञानिकों ने अपने संम्प्रदाय विशेष सें सम्बन्ध विचारधारा कों ही प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। मनोविज्ञान शरीर विज्ञान की एक शाखा है।

ऊपर लिखित विभिन्न परिभाषाएं मनोविज्ञान के स्वरुप पर अपने-अपने ढंग से प्रकाश डालती है,और यदि उन सभी को ध्यान सें देखा जाए तो निष्कर्ष कें रुप में मनोविज्ञान को इस प्रकार परिभाषित किया जा सकता है ।

" मनोविज्ञान बाहरी भीतरी दबावो एवं प्रभावो कें अधीन व्यक्ति कें मन कें ज्ञात अज्ञात पक्षो, अनुभूतियों, क्रिया प्रतिक्रियाओ, प्रभावो इत्यादि का विश्लेषक शास्त्र है । "

मनोविज्ञान के प्रकार

मनोविज्ञान के अनेक प्रकार है,प्रत्येक का अपना-अपना महत्व है,परन्तु इसका मतलब यह नहीं की प्रत्येक अपने आप में स्वतंत्र है। बल्कि एक दूसरे को ओवरलेप करते है। मनोविज्ञान के प्रकार इस प्रकार है।

1. **आसामान्य मनोविज्ञान** - | मनोविज्ञान में सामन्य व्यक्तियों के अतिरिक्त असामान्य व्यक्तियों का अध्ययन किया जाता है। अथवा आसामान्य मनोविज्ञान में व्यक्तियों की अनेक प्रकार की असामान्यताओ से सम्बन्धित समस्याओं का अध्ययन किया जाता है। इस मनोविज्ञान कि कुछ प्रमुख समस्याएं निम्न प्रकार सें है - संवेदनात्मक प्रत्यक्षीकरण में सम्बन्धित असामान्यताएँ , संज्ञान सें सम्बन्धित असामान्यताएँ, अभिप्रेरणात्मक औंर मनोवैज्ञानिक प्रकार्यो सें सम्बन्धित असामान्यताएँ, मनोगत्यात्मक प्रकार्यो से सम्बन्धित असामान्यताएँ, सामाजिक व्यवहार सें सम्बन्धित असामान्यताएँ, जैसे - अपराध, मद्यपान तथा अन्य सामाजिक व्याधिकीय व्यवहार। इसके अतिरिक्त असामान्य मनोविज्ञान में व्यक्तित्व की असामान्यताओ का अध्ययन किया जाता है,जैसे साइकोसिस, न्यूरोसिस, साइकोसोमेटिक, डिस्ऑडर्स, मानसिक दूर्बलताएँ और चरित्र दोष आदि। आधुनिक युग में असामान्य मनोविज्ञान एक वस्तुनिष्ठ विज्ञान औंर मनोविज्ञान की एक शाखा है,जिसकी समस्याओ कें अध्ययन कें लिए कई प्रकार की एप्रोचेज का उपयोग किया जाता है,जैसे फिजियोलॉजीकल, विहेवियरल, साइकोडायनेमिक, सोशियोकल्चर, एम्सीपेरीमेन्टल और आवजरवेशनल एप्रोचेज आदि।

2. **व्यावहारिक मनोविज्ञान** - मनोविज्ञान का उपयोग व्यक्ति कें व्यावहारिक जीवन सें सम्बन्धित समस्याओ के अध्ययन में भी किया गया है। व्यावहारिक मनोविज्ञान में बहुधा ऐसी समस्याओ का अध्ययन किया जाता है। जों व्यक्ति कें जीवन सें सम्बन्धित आवश्यकताओ सें सम्बन्धित होती है। अत: कहा जा सकता है,कि इसमें ऐसी समस्याओ का अध्ययन किया जाता है,जो मानव जीवन के लिए वैज्ञानिक ज्ञान की दृष्टि से उपयोगी होती है। आज व्यावहारिक मनोविज्ञान का काफी महत्व है। कार्य,व्यवसाय, शैक्षिक, व्यावसायिक, मैनेजमेन्ट , धर्म तथा विज्ञान, ट्रेफिक सें सम्बन्धित समस्याओ का अध्ययन व्यावहारिक मनोविज्ञान में किया जाता है।

3. **बाल मनोविज्ञान-** बाल मनोविज्ञान का एक बड़ा ही महत्वपूर्ण क्षेत्र है। जिसमें जन्म कि पूर्व अवस्था, जन्म शैशवावस्था, बाल्यावस्था, किशोरावस्था, और परिपक्वावस्था तक विभिन्न मनोवैज्ञानिक प्रतिक्रियाओ के विकास का अध्ययन किया जाता है। **बरगर का विचार** है,कि नवजात शिशु अर्थात कोरा कागज नहीं है,जिस पर संरक्षको की इच्छाओ को अंकित किया जा सके। बाल मनोविज्ञान कें क्षेत्र में मुख्यत: जिन समस्याओं का अध्ययन होता है,वह निम्न प्रकार से है - प्रारम्भिक अनुभव और निओनेट पीरियड से सम्बन्धित समस्याएँ, व्यक्तित्व विकास और व्यक्तित्व असामान्यताओ से सम्बन्धित समस्याएँ, संरचनात्मक विकास से सम्बन्धित समस्याएँ, प्रत्यक्षीकरण और भाषा के विकास सें सम्बन्धित समस्याएँ, बौद्धिक सामाजिक और संवेगात्मक विकास से सम्बन्धित समस्याएँ आदि। बाल मनोविज्ञान में बच्चों की शिक्षा से सम्बन्धित समस्याओ का भी अध्ययन किया जाता है।

4. **नैदानिक मनोविज्ञान-** नैदानिक मनोविज्ञान के अंतर्गत असामान्य व्यवहार सें सम्बन्धित रोगो और समस्याओ कें कारणों का पता लगता है। उन्हें समझता है,और फिर उत्पन्न कारणों को दूर करके व्यक्ति को समाज में प्रभावपूर्ण समायोजन कें लिए उपयुक्त निर्देश भी देता है। अपने देश के बड़े-बड़े अस्पतालो में भी अब एक नैदानिक मनोविज्ञान है। नैदानिक मनोविज्ञान के क्षेत्र में एक नया क्षेत्र विकसित है। जिसे Child Social Psychology कहते है। Clinical Social Psychology कें क्षेत्र में अनेक महत्वपूर्ण समस्याओ का अध्ययन किया गया है। नैदानिक मनोविज्ञान कें कुछ अन्य विशिष्ट क्षेत्र है। Clinical test & Diagnosis, Psychological Guidance, Treatment & Care तथा Clinical Diagnosis आदि।

5. **तुलनात्मक मनोविज्ञान-** तुलनात्मक विज्ञान में विभिन्न जाति कें प्राणीयों के व्यवहारो में पाई जाने वाली समानता सें सम्बन्धित समस्याओं का अध्ययन किया जाता है। मार्गन, थार्नडाइक और यर्म्ज आदि कुछ ऐसी मनोविज्ञानिक है,जिन्होने अपना जीवन पशुओ कें व्यवहार के अध्ययन में लगाया औरं पशुओ के अध्ययन सें प्राप्त परिणामो की तुलना मनुष्य कें व्यवहारो से की। **वाटसन** जिसने मनोविज्ञान की व्यवहार का मनोविज्ञान तथा विज्ञान की मान्यता दिलाने के लिए प्रयास किए उन्होने ने भी तुलनात्मक मनोविज्ञान कें अंतर्गत समस्याओ का अध्ययन किया जाता है।

तुलनात्मक मनोविज्ञान से सम्बन्धित समस्याओ का अध्ययन मनोविज्ञान में इसलिए भी महत्वपूर्ण है,क्योकि इसमें प्रयोगशाला में पशुओ के उन व्यवहारो का अध्ययन किया जाता है,जो अध्ययन प्रयोगशाला की परिस्थितियो में मनुष्यों पर संभव नहीं है। दूसरा तुलनात्मक मनोविज्ञान का मनोविज्ञान में एक महत्व यह भी है,कि मानव बच्चों पर बहुत से अध्ययन संभव नहीं है,जो कि पशुओ के बच्चों पर किए जाते है,और इन अध्ययनो से प्राप्त परिणामो की तुलना करके मानव शिशुओ के सम्बन्ध में निष्कर्ष प्राप्त कर लिए जाते है।

6. **विकासात्मक मनोविज्ञान** - इस मनोविज्ञान में मुख्यत: वैयक्तिक लक्षणो के क्षेत्र में वैयक्ति भिन्नताओ की प्रकृति और उत्पत्ति सें सम्बन्धित समस्याओ का अध्ययन किया जाता है। इस प्रकार की भिन्नताएँ केवल मनुष्यो में ही नहीं पाई जाती है,बल्कि पशुओ में भी पाई जाती है। बहुधा अधिगम, संवेगात्मकता और अभिप्रेरणा आदि से सम्बन्धित व्यवहार लक्षणो की समस्याओ का अध्ययन इस मनोविज्ञान में किया जाता है। इस मनोविज्ञान के अंतर्गत जिन समस्याओ का अध्ययन किया जाता है,वे इस प्रकार है - वंशानुक्रम और पर्यावरण से सम्बन्धित समस्याएँ जिनके कारण मनोवैज्ञानिक लक्षणो से भिन्नताएँ उत्पन्न होती है। कुछ बुद्धि की प्रकृति, बुद्धि की संरचना, बौद्धिक विचलन, विभिन्न प्रकार के मानसिक दोष, धनात्मक और ऋणात्मक विकास, सामूहिक अंतर, यौन सम्बन्धी अंतर, प्रजातीय और सांस्कृतिक अंतर आदि से सम्बन्धित समस्या का अध्ययन मनोविज्ञान के अंतर्गत किया जाता है।

8. **प्रयोगात्मक मनोविज्ञान**- प्रयोगात्मक मनोविज्ञान, मनोविज्ञान का एक महत्वपूर्ण प्रकार है। मनोविज्ञान की इसी शाखा को मनोविज्ञान को विज्ञानो की श्रेणी में लाने का श्रेय है। इस मनोविज्ञान में सभी समस्याओ का अध्ययन किया जाता है। परन्तु अध्ययन केवल प्रयोगात्मक विधि की सहायता से किए जाते है। आजकल जटिल से जटिल समस्याओं का अध्ययन बड़े-बड़े और कई-कई प्रयोगात्मक व नियंत्रित समूहो की सहायता से किए जाते है।

9. **शैक्षिक मनोविज्ञान**- शिक्षा मनेाविज्ञान में बहुधा शिक्षा के क्षेत्र की समस्याओं का अध्ययन सामान्य मनोविज्ञान के आधार पर किया जाता है। इसके अंतर्गत निम्न समस्याएँ आती है - बच्चों की अधिगम प्रक्रिया सें सम्बन्धित सैद्धांतिक और व्यावहारिक समस्याओं का अध्ययन, बच्चों की विभिन्न योग्यताओ से सम्बन्धित समस्याएँ, बच्चो के प्रशिक्षण सें सम्बन्धित समस्याएँ, बच्चों की अभिप्रेरणा और आकांक्षा स्तर सें सम्बन्धित समस्याएँ उनकी उपलब्धि

और परीक्षा सें सम्बन्धित समस्याएँ, उनके पाठ्यक्रम सें सम्बन्धित समस्याएँ विद्यार्थियों कें भविष्य योजनाओ सें सम्बन्धित समस्याएँ, विद्यार्थियों की अंत: क्रियाओ सें सम्बन्धित समस्याओं का भी अध्ययन किया जाता है।

10. **जीओ साईकोलॉजी-** जीओ साईकोलॉजी कें अन्तर्गत मानसिक अवस्थाओ औंर व्यवहार से सम्बन्धित प्राकृतिक पर्यावरण सें सम्बन्धित समस्याओं का अध्ययन किया जाता है। इस मनोविज्ञान में मुख्यत: चार क्षेत्रो से सम्बन्धित समस्याओं का का समाधान किया जाता है Weathere, Climate, Soil,landscape ।

11. **औद्योगिक मनोविज्ञान -** औद्योगिक मनोविज्ञान में मुख्यत: उद्योग की परिस्थितियों में व्यक्तियों के व्यवहार का अध्ययन, विभिन्न उद्योगो कें लिए व्यक्तियों का चयन, उत्पादन को बढ़ाने वाली परिस्थितयाँ औद्योगिक दुर्घटनाएँ उद्योग में अरोचकता, थकान, क्रय-विक्रय, उपभोक्ता और विज्ञापन आदि से सम्बन्धित समस्याओं का अध्ययन किया जाता है। आजकल इसका प्रयोग काफी हो रहा है,क्योंकि उद्योग जगत में आई समस्या का समाधान आसानी से हो जाता है।

12. **कानूनी मनोविज्ञान-** कानून के अंन्तर्गत भी मनोविज्ञान का हस्तक्षेप है,अपराध जगत वर्ग में और न्यायलयो में बहुत-सी ऐसी समस्याएँ है,जिनका कि मनोवैज्ञानिक अध्ययन आवश्यक है। सही अपराधी पकड़ना, सही गवाही दिलाना, अपराधी को उचित न्याय दिलावाना आदि से सम्बन्धित कुछ ऐसी समस्याएँ है,जिनका मनोवैज्ञानिक अध्ययन किया जाता है। एक अच्छा एडव्होकेट मनोवैज्ञानिक पहले होता है।

13. **मिलिट्री साईकोलॉजी -** सेना के विभिन्न प्रकार सैनिको और अधिकारियो के चुनाव में उनके प्रशिक्षण में, उनकी पदोन्नती में तथा उसके स्थानान्तरण में मनोविज्ञान बहुत उपयोगी है। सैनिको की बुद्धि और व्यवहार स्तर को मापने कें लिए आर्मी-एल्फाटेस्ट को विकसीत किया गया। सैन्य मनोविज्ञान में नेतृत्व, सैन्य मनोबल, सैना में मानवीय सम्बन्धो आदि सें सम्बन्धित कुछ अन्य समस्याएँ है।

14. **गणितीय मनोविज्ञान** - | गणितीय मनोविज्ञान कें अन्तर्गत मनोविज्ञान ज्ञान को किस प्रकार गणितीय भाषा में अभिव्यक्त किया जा सकता है, इस मनोविज्ञान का प्रारंभ फेम्नर के अध्ययनो से हुआ। इस मनोविज्ञान की प्रमुख समस्याएँ है - Measusement theory, Choice & Decision, Leazning Psychology, Social Iterocation, Decision Processes Conjoint Measuzement आदि।

15. **दैहिक मनोविज्ञान**- दैहिक मनोविज्ञान में व्यक्ति कें आंतरिक अंगो की संरचना, उनके प्रकार और आंतरिक वातावरण आदि सम्बन्धित समस्याओं का अध्ययन किया जाता है। विभिन्न नाड़ी संस्थानो से सम्बन्धित समस्याएँ भी इसी मनोविज्ञान कें अन्दर आती है। दैहिक मनोविज्ञान में दैहिक और मानसिक प्रक्रियाओ कें सम्बन्धो सें सम्बन्धित समस्याओं का भी अध्ययन किया जाता है

16. **राजनैतिक मनोविज्ञान** - राजनैतिक प्रक्रियाओ के व्यक्तिगत अध्ययनों सम्बन्धित समस्याओं का अध्ययन इस मनोविज्ञान में किया जाता है। इस मनोविज्ञान में मुख्यत: निम्न समस्याओं का अध्ययन किया जाता है। राजनैतिक संरचना, जनमत, सदस्यता, समूह पार्टी, नेतृत्व, चुनाव आदि से सम्बन्धित समस्याएँ।

17. **सामाजिक मनोविज्ञान**- सामाजिक मनोविज्ञान में समाज में व्यक्ति कें व्यवहार सें सम्बन्धित समस्याओं का अध्ययन किया जाता है। इस मनोविज्ञान में मनुष्य और उसके चारो ओंर के समाज की पारस्परिक प्रतिक्रिया का औंर इस पारस्परिक प्रतिक्रया सें प्रभावित व्यक्ति से विचारो, भावनाओं और संवेगो का अध्ययन किया जाता है। इस मनोविज्ञान में मुख्यत: निम्न समस्याओं का अध्ययन किया जाता है - बालक के समाजीकरण, संस्कृति और व्यक्तित्व का अध्ययन, वैयक्तिक और सामूहिक अंतर, सामाजिक अन्त क्रियाएँ, नेतृत्व, सामूहिक प्रक्रियाएँ, भीड़ औंर श्रोतागण, संप्रेषण की गतिशीलता, प्रेरणा, प्रत्यक्षीकरण और सीखने की प्रक्रिया, अभिवृति औंर पक्षपात, सामाजिक व्याधिकी, राष्ट्रीय औंर अंतराष्ट्रीय राजनीति आदि से सम्बन्धित समस्याएँ आती है।"[17]

इस प्रकार मनोविज्ञान कें प्रकार को देखने पर पता चलता है कि मनोविज्ञान का हर क्षेत्र में अपना एक अलग ही महत्व है।

साहित्य में मनोविज्ञान

"मानव मन मनोविज्ञान का विश्लेष्य है। यही मन भावों या मनोवेगी का आश्रय मनोविकारों का स्त्रोत एवं अनुभूतियों का कोष है। साहित्य इन्ही मनोविकारो औंर अनुभूतियो की कथा है। अत: मनोविज्ञान साहित्य का व्याख्याता है। उसके अध्ययन का एक दृष्टिकोण भी है।"18

"साहित्य का विषय है मनुष्य, मनुष्य का मन औंर उसकी संवेदना उसके निरोध उसकी तृप्ति, उसकी आकांक्षाएँ, संक्षेप में उसके चरित्र का सब कुछ उसकी भीतरी बाहर, उसका 'आत्मापर' उसकी 'स्वनिष्ठा' उसकी 'परनिष्ठा' में भी 'स्वनिष्ठा'। इस सबकी विवेचना विश्लेषण तो मनोविज्ञान का आँगन है। इस मनुष्य में क्या समाया हुआ है ? इसके 'भीतर-बाहर' कितना आ जाता है,जानने का प्रयास ही मनोविज्ञान है। फ्रायड ने संकेत दिया है, कि महान उपन्यासों और नाटको का मूल विषय मानव औंर व्यक्तित्व कें मूल द्वन्दी की अभिव्यक्ति है। यह अचेतन मन सें लेखक के मस्तिष्क में उभरती है। उनके अनुसार लेखक अपने कथा वस्तु कें चयन में शैशव और बाल्यवस्था कें दूरगामी प्रभावो या अनुभवो से प्रभावित होता है"19

"साहित्य के भावलोक और विचार लोक कें साथ-साथ उसके रस बोध को भी मनोविज्ञान ने बहुत प्रभावित किया है। आज चर्वणा की भी मनोविज्ञानपरक व्याख्या की गई है। मनोवैज्ञानिक दृष्टि सें रस भाव या स्थाई भाव न होकर भाव या अनुभूति की एक ऐसी अनुभूति है,जो निर्वेयक्तिक और साधारणीकृत होती है। कवि या साहित्यकार अपनी रचना में भावो और विचारो और कल्पित रुपों को नहीं अपितु इनकी अनुभूति कों प्रस्तुत करता है,जिसे पाठक निर्वेयक्तिक या साधारण रुप में प्राप्त करता है,मनोविज्ञान साहित्यकार के जीवन दर्शन को एक दिशा दी है। प्रत्येक कृति का उससे सापेक्ष होना अनिवार्य है। प्रतीको के चयन और मनोविज्ञान को परिभाषिक शब्दावली के चयन में भी साहित्य मनोविज्ञान की ऋणी है।"20

"साहित्य ने जीवन से प्रेरणा ग्रहण की है। जीवन का विकास मनोविकारो पर आधारित है, और मनोविकार का आधार मनोविज्ञान है। मनोविज्ञान की स्थिति जीवन की अनेकानेक अभिव्यक्तियों में है।

अत: मनोविज्ञान और साहित्य में साधन और साध्य का सम्बन्ध है। यह साधना प्राचीन काल से ही मनोविकारो में व्यक्त हुई है,उसी सें साहित्य जीवन का पर्याय बनकर विकासोन्मुखी रहा है।

डॉ.देवराज साहित्य की भाँति मनोविज्ञान का भी जीवन से अविच्छेद सम्बन्ध स्थापित करते है। उनके मत में मनोविज्ञान अपने अंतिम विश्लेषण में जीवन शब्द का प्रयाय हो जाता है। क्योंकि जिसे हम जीवन कहते है,वह अधिकांश रुप सें हमारे मनोजगत की सूक्ष्मता की वस्तु है,इस तरह साहित्य और मनोविज्ञान जीवन की अध्ययन सन्निकटता के कारण परस्पर समान धर्मी हो गए है।"21

"वास्तविक रुप सें मनोविज्ञान औंर साहित्य दोनो मानसी सृष्टी है,दृष्टरुप में साहित्य मनोविज्ञान से पुरातन लगता है। परन्तु अपने जीवन्त रुप में मनोविज्ञान विश्व साहित्य में सदा से स्वीकृत रहा है। वैदिक ऋचाओ, उपनिषदो , पौराणिक, आख्यानो , वाल्मिकी, कालिदास, शेक्सपियर, दातेय तथा गेटे के साहित्य में यत्र-तत्र बिखरा सहज रमणीय है। मनोविज्ञान को एक विज्ञान के रुप में मान्यता बींसवी सदी की देन है। तथा साहित्य क्षेत्र में उसकी सैद्धांतिक मान्यताओ का प्रवेश इस शतक कें अनुग्रह मात्र कें कारण पूर्ववती सम्पूर्ण साहित्य कों मनोवैज्ञानिक ठहराना अक्षम्य अपराध होगा।प्रेमचन्द पहले उपन्यासकार थे, जिन्होंने मानव मन की अतल गहराईयों को नापा सर्वप्रथम उपन्यास का सम्बन्ध समाज से जोड़ा वें साहित्य को जीवन की अलोचना मानते थे , और जब साहित्य जीवन की आलोचना है,तो सर्जक जीवन से अलग होकर जी नहीं सकता अत: प्रेमचंद ने समाज के हर पक्ष का बड़ी गहराई से अध्ययन किया और उसे साहित्य में स्थान दिया उन्होंने अपने उपन्यासो में मानव जीवन का चित्रण किया औंर सर्वप्रथम उन्होंने ने ही मध्यम वर्ग को अपने उपन्यासो में स्थान दिया। मध्यम वर्ग की कमजोरियों और कठिनाईयो का यथार्थ चित्रण प्रस्तुत किया उन्होंने सामाजिक कुरीतियों, आर्थिक आत्याचारो एवं राजनीतिक परतन्त्रता का विरोध किया। उनके साहित्य में अपने युग का बड़ा सजीव चित्रण मिलता है। लेखक कें मन ने इन सब समस्याओ कों भोगा है। इसी का परिणाम है,कि उनका सारा चित्रण यथार्थ के बहुत निकट गया है।"22

इस सब के अतिरिक्त प्रेमचंद कें उपन्यासो में कहीं-कहीं पात्रों का बड़ा ही सुन्दर मनोवैज्ञानिक कें सिद्धांतो कें साथ भारतीय मनीषियों का बहुत अधिक परिचय नहीं था। परन्तु फिर भी फ्रायड इत्यादि का नाम लोग सुनने लगे थे। इसीलिए प्रेमचंद कें कथा साहित्य में बहुत सी घटनाएँ ऐसी आ गई है, जिनकी व्याख्या अचेतन मनोविज्ञान कें द्वारा ही ठीक तरह सें हो सकती है।

लेकिन मानव मन की गुत्थियों कों सुलझाने कें लिए उस समय जैनेन्द्र, इलाचन्द जौशी, औंर अज्ञेय कें अतिरिक्त उस धारा में धर्मवीर भारतीय, डॉ.देवराज, प्रभाकर माचवे आदि आ मिलें परन्तु समय कै साथ- साथ व्यक्ति कें विचारो में भी परिवर्तन आता है। 23 "वैज्ञानिक युग में जब सें मानव कै सामाजिक मूल्यों में परिवर्तन हुआ है, तब सें उपन्यासकारो कै द्वारा कथानक निर्माण में भी वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनाए जाने लगा। अब सहज या परपरानुमोदित विश्वासो कें आधार पर जीवन की अभिव्यक्ति नहीं कि जाती है, अब इसका यथार्थपरक आधार भी अत्यंत आवश्यक समझा जाता है। यही कारण है कि एक आलोचक के शब्दो में पूर्वापेक्षा सामायिक उपन्यासो का विषय क्षेत्र न केवल विस्तृत हो गया है, बल्कि वह जीवन के विविध स्त्रोतो से प्राप्त सत्य का आकलन करने की चेष्टा कर रहा है। समकालीन उपन्यासो में एक ओर मध्यमवर्गीय पारिवारिक जीवन की विसंगतिया है, मूल्यों का विघटन और मोहभंग की स्थिति है, वहीं दूसरी ओर वर्तमान में जीते हुए मनुष्य की निरर्थकता का बोध भी है। एक ओर प्रगतिवाद से उत्पन्न राजनीतिक जीवन की प्रतिक्रिया है, तो दूसरी ओर अस्तित्ववादी दर्शन सें उत्पन्न संकट के कारण लेखक किसी भी प्रकार की प्रतिबंद्धता सें मुक्त होकर सृजनात्मक क्रिया कें द्वारा अपने यथार्थ को प्रमाणिक अभिव्यक्ति देने का प्रयास कर रहा है।"23

डॉ.रामरतन भटनागर का कथन सहीं ही है। -

" **हैनरी जेम्स** कें समय सें ही उपन्यास विचारो का वाहक बना हुआ है, परन्तु आज यह विचार मूलकता जीवन दृष्टि बनी हुई है। टालस्टाय, ऐनद्रेजीद, सार्त्र सब कथा कों जीवन सम्बन्धी ऊहा पोह का साधन बनाते — है। जहाँ जीवन प्रवाह को पकड़ने की चेष्टा है। वहाँ भी जीवन दृष्टि की नवीनता ही अभिधेय है। इस प्रकार नया उपन्यास जीवन का चितेरा नहीं है, जीवन का समीक्षक है।

वह मूल्य देता है, औपंान्यासिक रस, चारित्रिकता, अंन्तर्मन की उपलब्धियाँ उसकें लिए आज महत्वपूर्ण नहीं है।"24

निष्कर्ष के तौर पर हम कह सकते है,कि मनोविज्ञान साहित्य का आधार फलक तथा उसके मूल्यांकन का वैज्ञानिक निष्कर्ष है। पर कुछ इन जिन्हें मनोवैज्ञानिक सिद्धांतो के आधार पर सम्पूर्ण साहित्य की व्याख्या नितांत असंगत है। यथा आज भ्रांतिवश मनोविश्लेषण को मनोविज्ञान का पर्याय समझा जा रहा है,मनोविज्ञान की दुहाई देकर आज मनोविश्लेषणवादी साहित्य को अतृप्ति, दमन, कि प्रतिरक्षाक्रिया अथवा स्नायविक -विकार का परिणाम बता रहें है। पर उनके द्वारा प्रस्तुत साहित्य के आंशिक रुग्ण रुप की झाँकी उसका पूर्ण यथार्थ तो नहीं है। वह उदास भावनाओ का पूँजीभूत रुप भी है,वह जीवन कें महासागर में उठी हुई उच्चतम तरंग भी है। वह जीवन का चरम विकास भी है। अत: साहित्य कें विकृत सामान्य और अतिस्वप्न तीनो रुपों को दृष्टिपथ में रखकर उसकी व्याख्या की जानी चाहिये। सम्पूर्ण तथ्य कें अनुसार हम यहीं कहेंगे की साहित्य व मनोविज्ञान एक दूसरे की पूरक है। साहित्य में मनोविज्ञान सम्पूर्णत: समाया हुआ है।

321

नारी मनोविज्ञान

नारी मनोविज्ञान आज के कथाकारो के आकर्षण का सर्वप्रमुख विषय रहा है। अत: इसकी पृथ्क चर्चा अभिष्ट ही है। नारी में चेतना जागी है। अब वह परंपरा और रुढ़ियों के दम घोंटू ' सीखंचे ' को तोड़कर अनचाहा सुहाग तुलसी कों अर्पित करने में नहीं हिचकती क्योंकि अनिच्छित विवाह सें दाम्पत्य जीवन खाली लगता है। और पति पत्नी को अपरिचित व्रत जीवन बिताना पड़ता है। नारी कें पुरुष कें अन्यास से बचने कें लिए परंपरा प्राचीर कों भग्न कर आर्थिक स्वालंबन अविवाहित और विवाहित दोनो ही स्थितियों मे उसे मंहगी पड़ी है। खुले पंखो ने उसके डैने तोड़ दिये है। माँ बाप कें मर जाने कें बाद भाई बहन कें उत्तरदायित्व से कन्नीकाट गया है। आज कें युग में पुरुष जीवन साथी कें रुप में ऐसी नारी चाहता है,जो उसका भार हल्का कर सके इसलिए साथ रहने और विशेषत: (काफी दिनो) संतान कामना उसे नहीं है,फलत: सुहागिने पति सामिप्य और माँ बनने को तरसती रह जाती है। नारी में मातृत्व की कामना शाश्वत है। अत: " जीती बाजी " को हार और अकेली की नारी मात्र मातृत्व को आतुर है,और बाहर सें कर्कश दिखने वाली रानी माँ का चबुतरा न पूजने वाली गुलाबी भी अंतर में सन्तान वात्सल्यता से ओत प्रोत है। पुरुष के समान आगे बढ़ने कें कारण केवल पढ़-पढ़ कर नौकरी करके जीवन की अनिवार्य माँग परिवार सुख की उपेक्षा करने वाली नारी की उदासी हताश और अकेलापन ही हाथ लगा है। उसको लगता है,उसकी जिन्दगी केवल ऑफिस के 7 घण्टे की रह गई है। उसके बाद का समय प्रश्न चिन्ह बन जाता है। नारी शिक्षा सें विकसीत अहम उसके दाम्पत्य जीवन कें प्रति दृष्टिकोण अब पहले जैसा लचीला नहीं रहा। पुरुष का अहम टूटकर उसमें हीन भावना पनपा रहा है। फलत: परिवार टूट गए है। हीन पुरुष " मिट्टी की लोथ " " नारी का काव्य नहीं असमर्थ " पति को छोड़कर चली जाती है। महिला उपन्यासकार कें उपन्यास में चेतनागत जीवन मूल्य अपना अमूल्य स्थान प्राप्त कर गए है। समाज, राजनीति, धर्म, दर्शन, अर्थ, संस्कृति कें प्रति नवीन धारणाएँ इनके प्रगतिशील दृष्टिकोण की परिचायक है। एक विद्वान के शब्दों में चेतना एक अनवृत क्रिया है। जो मनुष्य समाज और समय सें कभी अलग नहीं की जा सकती है। चेतना मानव अस्तित्व कें सहज रुप- स्वरुप कें उद्‌घाटन में सहायक है। उनका उद्देश्य अस्तित्व की धारणा बनाना नहीं , अस्तित्व कें सजीव अनुभव कों प्रभावपूर्ण ढंग से पकड़ना है। इसी प्रकार डॉ.गुलाब राय हाड़े लिखते है - चेतना साहित्य का वह मूल तत्व है, जो साहित्यकार की पूर्वानुभूतियों को हर नए अनुभव कें साथ संशिष्ट कराते हुए एक समय सापेक्ष नवीन व्यवस्थापना को जन्म देती है।

इस प्रकार मृदुलाजी ने भी अपने उपन्यासों में नारी के संस्कारो सें मुक्ति उसका आर्थिक स्वालंबन, उसका पत्नीत्व -मातृत्व उसके अहम के विविध पक्षो की चर्चा विभिन्न समस्याओ द्वार समझाई है। गर्गजी ने जहां एक ओर एक पतिवृता नारी की मनोविज्ञानता को समझाया वहीं दूसरी ओर एक असफल प्रेमिका, असफल पत्नी, वासना की भूखी नारी का मनोवैज्ञानिक चित्रण भी बड़ी सूक्ष्मता से किया। अनित्य की नायिका " श्यामा " एक असफल प्रेमिका कें रुप में उभरी है। माधवी एक स्वतंत्र व उच्च परिवार की लड़की होने के बाद एक अच्छी पत्नी के रुप में हमारे समक्ष आई है।

" उसके हिस्से की धूप " की मनीषा प्रेम की चाह में भटकती हुई पाई गई। " मनु " प्रेम की चाह में अन्य पुरुष से सम्बन्ध स्थापित कर लेती है। इस प्रकार गर्गजी के नारी पात्र हमेशा मानसिक संघर्ष मे घिरे पाऐ गऐ हमेशा द्वन्द करते रहते है, अपने विचारो सें फिर चाहे वह मनीषा हो या मनु या श्यामा या माधवी, हर नारी पात्र एक समस्या से घिरा पाया गया, कहीं नारी सेक्स की भूखी पाई गई, कहीं प्यार की तो, कहीं विश्वास की शायद इसीलिए की नारी का विगत, आगत, अनागत, इसपर आधारित है। नारी पुरुष सम्बन्धो में मधुरता भी है, तो कहीं कटूता भी, निकटता भी है, और दूरी भी। प्रेम सम्बन्धो कें टूट जाने पर टूटती नारी का भी चित्रण है। और इसी स्थिति का साहस कें साथ सामना करने की क्षमता भी है। इसी प्रकार जो विवाह सात जन्मों का सम्बन्ध माना जाता था, अब समझौता मात्र रह गया है। दाम्पत्य सम्बन्धों के खोखले पन को बड़ी कुशलता से अपनी कृतियों में उजागर किया है।

निष्कर्ष के तौर पर हम गर्गजी कें नारी पात्रों का विस्तृत अध्ययन करने पर यही पाऐंगे की गर्गजी ने अपने उपन्यासों नारी की मनोवैज्ञानिकता का अति सूक्ष्म अध्ययन किया है। जो आज की नारी की हर समस्या को उजागर करता है। बस वही नारी है। नाम अलग-अलग है, जो जीवन में सब कुछ समर्पण करके भी अकेली, असहाय पाती है, बस साथ रहता है तो सिर्फ द्वन्द वो है, मानसिक द्वन्द।

मनोविज्ञान का स्वरुप क्या है, उसका शाब्दिक अर्थ क्या है, उसका पारिभाषिक विवेचना उसके प्रकार इन समस्त बातों का विस्तार पूर्वक अध्ययन करने उपरांत हम संक्षेप में इतना ही कहेंगे की मनोविज्ञान मनुष्य को प्रतिक्रियात्मक प्राणी के रुप में स्वीकारता है।

वह मनुष्य की नाना विधि उत्तेजनाओ कें प्रति गहरी दिलचस्पी रखता है। मनोविज्ञान कें अनुसार मनुष्य का व्यवहार उत्तेजना औंर प्रतिक्रिया द्वारा निर्मित होता है। इसलिए मनुष्य कें व्यक्तित्व की सही पकड़ कें लिए उसकी उत्तेजनाओ औंर प्रतिक्रियाओ को उसके सही परिवेश में देखना परखना होगा मानव कें विभिन्न अंगो का नियंत्रण मन करता है। इसलिए विभिन्न अवयवो कें लिए क्रिया संगठन को मानसिक क्रिया कहा जाता है।

इस प्रकार मनोविज्ञान मानव मन के अध्ययन का एक महत्वपूर्ण विज्ञान है, मानवीय व्यवहार का कोई कोना इससे अछूता नहीं रहा आज जीवन का मूल्यांकन मनोविश्लेषात्मक दृष्टि से किया जा रहा है। मनोविश्लेषण बतलाता है,कि व्यक्ति असामान्य रुप से व्यवहार क्यों करता है ? यह मानव को जानने का एक सूक्ष्मदर्शक यंत्र दूरबीन और एक्स-रे है। मनोविश्लेषण ने जीवन को ही नहीं कला और साहित्य कें प्रति अपनी भौतिक अवधारणाएँ प्रस्तुत की। फ्रायड ने कला और साहित्य को आकांक्षा पूर्ति माना है। कलाकार अपनी कला में अचेतन मन में दमित इच्छाओ की अभिव्यक्ति करता है । व्यक्ति केवल दिवास्वप्नो की मरीचिका बुनता है , किन्तु कलाकार जीवन से पलायन कर अपनी दमित कामनाओ को अभिव्यक्त करता है। फ्रायड के अनुसार अतृप्त वासनाओ का उदातीकरण है। एडलर की मान्यता है कला का निर्माण कायिक दोष से होता है। युग की धारणा है कि कलाकार सामूहिक अवचेतन को अपनी कला में प्रगट करता है। यह निशिचित रुप सें कहा जा सकता है, कि आज के युग के साहित्य में क्रांति लाने का कार्य मनोविज्ञान ने किया है। मनोविज्ञान ने साहित्य के क्षेत्र में क्रांति उपस्थित की है किन्तु उसका सबसे अधिक प्रभाव उपन्यास पर पड़ा है। आज उपन्यास मनुष्य कें अचेतन मन को चेतन मन तक लाने में सक्षम हुआ है,यह सिद्ध किया गया है,कि मनुष्य का अंर्तजगत भी है, और यह अंतर्गत बाह्य जगत से कहीं अधिक शक्तिशाली और जटिल है। मनुष्य की इच्छाएँ अपनी बाह्य अभिव्यक्ति न पाकर अन्तर्मुखी हो जाती है। और अवचेतन जगत में स्थिर और क्षुण रहकर अनेक कुंठाओ अस्पष्ट अर्मूत चित्रो तथा व्यापारो को जन्म देती रहती है । वस्तुत: यही मानव चरित्र का सम्पूर्ण पर गूढ़ रहस्य है । मनोविश्लेषणात्मक उपन्यास ऐसे ही मानव जीवन के अंर्तजगत का चित्रण करता है,वह उपन्यास के मुख्य पात्र या अन्य पात्रो कें जीवन औंर उनकी घटनाओ कों उपन्यासकार कें साथ-साथ मनोविश्लेषक कें रुप में भी अनुभव करता है।

मनोविज्ञानिक उपन्यासों का उद्देश्य पात्रों का मनोवैज्ञानिक शोध करना मनुष्य वास्तव में कैसा है, उसका पता लगाना, उपन्यासो का कार्य होता है। वास्तव में यथार्थ आदमी भले या बूरे नहीं होते आधुनिक मनोविज्ञान की खोजों कें अनुसार नदी की तरह होते है, कभी तैज दोड़ते हुए, कभी मंद चलते हुए, कभी टेड़े बहते हुए, कभी सीधे बहते हुए, कभी उथले और स्वच्छ कभी गहरे और अगम्य। अत: यथार्थ आदमी का चित्रण करने का अर्थ है,उसके व्यक्तित्व की सारी अंतर्विरोधी, प्रवृतियों, जटिल संवेदनाओ , विषम मन: स्थितियों का वैविध्य चित्रित करना है। यह कहा गया है,कि मनोवैज्ञानिक उपन्यास का मूल तत्व मनोचित्रण है -

चरित्र का स्वरूप एवं परिभाषा

" कथात्मक साहित्य का अन्यतम तत्व -चरित्र

वे व्यक्ति जिनके द्वारा कथा की घटनाएँ घटती है, अथवा जो उन घटनाओ से प्रभावित होते है, इन्हीं व्यक्तियों कें क्रियाकलापो सें कथानक औरं कथा वस्तु का निर्माण होता है, अत: भले ही किसी कृति में घटनाओ की बहुलता और प्रधानता हो पात्रों या चरित्रों का उसमें अभाव नहीं हो सकता कथा की कल्पना में ही पात्रो की विद्यमानता निहित है। कथा के पात्रो को किस प्रकार उपस्थित किया जाए यह कलाकृति कें रुप लेखक की रुची तथा योग्यता और उसकी कृति कें उद्देश्य पर निर्भर है। काव्य, नाटक, उपन्यास, कहानी आदि में पात्रो के प्रयोग अर्थात चरित्र चित्रण के अपने -अपने ढंग और विधान होते है, सब मिलाकर पात्रों का चित्रण तीन प्रकार से हो सकता है।

(1) पात्रों के कार्यो के द्वारा

(2) उनकी बात-चित के द्वार

(3) लेखक के कथन और व्याख्या द्वारा

पहले व दूसरे को नाटकीय या अप्रत्यक्ष चरित्र चित्रण कहते है। औरं तीसरे को विश्लेष्णात्मक या प्रत्यक्ष चरित्र चित्रण कहते है। नाटक में साधारणतया अप्रत्यक्ष चरित्र चित्रण द्वारा ही अर्थात पात्रों के कार्यो औरं उनके तथा उनके विषय में दूसरो की बात-चित कें सम्मिलित प्रभाव कें द्वारा ही हम उनके चरित्र कें विषय में कोई धारणा बना सकते है। साधारणतया इसलिए कभी- कभी किसी पात्र विशेष कें विषय में लेखक किसी अन्य पात्र कें माध्यम से चारित्रिक विश्लेषण उपस्थित करके उस पात्र को समझने में दर्शको की सहायता करता है। परन्तु नाटक कें चरित्र चित्रण में अप्रत्यक्ष या नाटकीय ढंग ही स्वभाविक औरं समीचीन है। इस प्रकार कें चरित्र चित्रण की खूबी यह है, कि दर्शक या पाठक तथा पात्रों के बीच सीधा सम्बन्ध रहता है। परन्तु चरित्र को आंतरिक सूक्ष्मताओं और मनोवैज्ञानिक रहस्यों को इस शैली में उतने स्पष्ट और असंदिग्ध रुप में उपस्थित नहीं किया जा सकता उपन्यास कें चरित्र चित्रण में अभिनयात्मक तथा विश्लेष्णात्मक शैलियों को मिलाकर चरित्र चित्रण अधिक विषद रुप में किया जा सकता है। उपन्यास कें चरित्र चित्रण में लेखक को व्याख्या और टिका टिप्पणी करने की इतनी स्वतंत्रता होती है, कि वह चारित्रिक विशेषताओं कें उद्घाटन में नाटक की अपेक्षा कहीं अधिक विस्तार और गहनता ला सकता है।

नाटक और उपन्यास में मुख्य अंतर यही है की नाटक में कार्य की प्रधानता रहती है व उपन्यास का अध्ययन चारित्रिक अध्ययन में ही अधिक माना जाता है,कार्य या घटना को प्रमुखता देने वाले उपन्यास उच्चकोटी के नहीं बन पाते उपन्यास में चरित्र को धीरे-धीरे विकसित होता हुआ दिखाकर विभिन्न परिस्थतियों में उसके उत्थान पतन कें अगणित परिवर्तनो को चित्रित किया जा सकता है। सुविधानुसार उपन्यासकार नाटकियता और विश्लेषणता का समुचित समन्वय करके मानवीय, मनोवेष, भावावेष, विचार भावना, उद्देश्य, प्रायोजन आदि का सूक्ष्म से सूक्ष्म आकलन कर सकता है। गतिशील चरित्रो की सृष्टि ही कथा साहित्य की महत्ता की कसौटी है। एक ही पात्र कें स्वभाव तथा उनके आधार पर किए गए कार्यो में मनोविज्ञान सम्मत परिवर्तन तथा कभी-कभी आश्चर्य जनक विरोध का चित्रण करके कथा साहित्य में जिस सौंदर्य की सृष्टि की जा सकती है,अर्नाल्ड बेनेट कें शब्दो में हम कह सकते है कि कथा साहित्य का मूलाधार चरित्र चित्रण ही है। अन्य कुछ नहीं कथा की घटनाएं तो प्राय: पात्रो के स्वभाव और प्रकृति से ही प्रसूत होती है। उसके वातावरण या देशकाल का निर्माण चरित्र को स्वभाविकता प्रदान करने के लिए ही किया जाता है। कथोपकथन घटनाओ सें भी अधिक चरित्र को ही व्यंजित औंर प्रकाशित करता है,तथा कथा कें उद्देश्य की महत्ता भी चरित्र में ही निहित है। मनोविज्ञान कों साहित्य में जो महत्ता मिली है,उसका आधार भी चरित्र चित्रण ही है।"[25]

"पात्र तत्व की महत्ता ही चरित्र के कारण है,अन्यथा तो पात्र की वही स्थिति है,जो भाव शून्य अनुभूति शून्य सब परिस्थितियों में एक सी रहने वाली प्रस्तर प्रतिमा की होती है। पात्रो में सजीवत और भिन्नता स्थापित करने वाला यह चरित्र ही है। वस्तुत: इसी कारण पात्र और चरित्र को सम्बद्ध कर दिया जाता है,अत: पात्र तत्व का पूर्ण विवेचन चरित्र कें विवेचन कें बिना नहीं किया जा सकता। मनोवैज्ञानिक ग्रंथो में अधिकांशत: व्यक्तित्व के मनोविज्ञान के अंतर्गत ही चरित्र की चर्चा हुई है। "[26]

उदाहरणार्थ कुछ परिभाषाएँ दृष्टव्य है →

"(1) **विलियम आर्चर** का कहना है,कि चरित्र एक प्रकार की बोद्धिक, भावुक और हताश आदतों का सम्मिश्रण है,पर आदतो कें सम्मिश्रण कों चरित्र की संज्ञा कैसे दी जा सकती है। आदत और चरित्र अलग-अलग है।

(2) एक अन्य मनोवैज्ञानिक **मैकडूगल** के अनुसार चरित्र प्रज्ञात्मक, भावात्मक एवं क्रियात्मक तत्वो का संगठन है। पर यह परिभाषा भी पूर्ण नहीं लगती क्योंकि इन तीनो तत्वों (प्रज्ञा+भाव+क्रिया) का संगठन मात्र ही चरित्र नहीं होता।

(3) **मैम्स शोत** सामाजिक परिपार्श्व में विकसित होने वाला तथा क्रियाशील रहने वाले सैल्फ को चरित्र कहा है। "27

इस प्रकार चरित्र की परिभाषा हम साधारणतया इस प्रकार कर सकते है,कि चरित्र कें पात्र उसके मस्तिष्क कें प्राणी की तरह बोलते हुए, घुमते हुए, जीवित मानव प्राणियों की तरह दिखें। उनमें हर एक की गहराई और चौड़ाई संकड़ापन औंर छिछलापन स्पष्ट दिखाई पड़े। वस्तु की अपेक्षा चरित्र का अधिक महत्व है। क्योंकि वस्तु का विकास चरित्र कें विकास कें लिए होता है। यह कहा गया है कि महान उपन्यासकार का मूल उद्देश्य चरित्र को नाटकीय रुप में प्रस्तुत करना है। चरित्र कें अभाव में सफलतापूर्वक कथा बढ़ाना संभव नहीं है। प्राय: वस्तु और चरित्र को भिन्न-भिन्न समझा जाता है। परन्तु एकतासूत्र में गूँथे हुए होते है। चरित्र ही पाठक को अपने में बांधे रखता है। चरित्र ही हमें हमारी समस्याओं सें हमें परिचित करता और चरित्र ही उसका समाधान हमारे समक्ष रखता है। चरित्र एक साथी की तरह होता या कह सकते है,चरित्र एक अपनत्व का एहसास दिला देता है। चरित्र ही हमें अन्तरमन तक झकझोर कें रख देता है। उपन्यास में चरित्र का एक अपना महत्व है। चरित्र उपन्यास का मुख्य आधार फलक है। एक चरित्र कितना पाठक को अपने में बांधे रखता है। यही उपन्यास की उपलब्धि कहलाती महत्ता कहलाती है। क्योंकि उपन्यास की ख्याति उसके चरित्र पर टिकी होती है। इसलिए चरित्र उपन्यास की आत्मा — है। एक शरीर जिस तरह आत्मा के बिना मृत शरीर कहलाता है। उसी प्रकार एक उपन्यास चरित्र कें बिना मात्र एक कोरा कागज है। चरित्र की अपनी मान्यताएँ है, अपने आदर्श है, अपने विचार है, और अपने दृष्टिकोण है। उनके द्वारा जीवन की समस्त आशा निराशाएँ सुख-दुख जैसे हमारी आंखो के समक्ष मूर्तिमन्त हो उठते है।

नारी चरित्र

"हिन्दी उपन्यासों में नारी का स्वरुप निर्धारित करने से पहले नारी कें व्यक्तित्व का मूल्यांकन करना यहाँ नितान्त अपेक्षित है। नारी भगवान की अद्‌भूत कृति नहीं है, वरन मानवों की भी अद्‌भूत सृष्टि है। मनुष्य निरन्तर अपने अन्तरतम से नारी को सौन्दर्य की विभूषित करता है। कविगण स्वर्णिम कल्पना कें धागो से उसके लिए एक जाल-सा बुनते है। चित्रकार उसके स्वरुप को उसके बाल सौंदर्य को अमरतत्व प्रदान करते रहते है। मानव हृदय की वासना ने सदैव नारी के यौवन को ऐश्वर्य प्रदान किया है। नारी अर्द्धनारी है,और अर्द्ध स्वप्न।

हिन्दू - धर्म ग्रंथो में एक ओर नारी की प्रशंसा का प्राचुर्य है, दूसरी ओर नारी निन्दा भी कम नहीं की गई है। नारी निंदा की यह भावना केवल भारत तक सीमित नहीं रही, संसार के अन्य धर्म ग्रंथो में भी नारी निंदा का प्राबल्य रहा है। यूरोप के प्रसिद्ध लेटिन धर्मयाजक टारटुलियन ने नारी कें सम्बन्ध में लिखा था की नारी शैतान का हार है,दैवी नियम या धर्म का सबसे पहले त्याग करने वाली है। सेंट आगिस्ट तो कहा करते थे,की नारी चाहे माता के रुप में हो,चाहे बहन के रुप में लेकिन हमें उससे सदैव सचेत रहना चाहिये, क्योंकि प्रत्येक स्त्री में हौवा का निवास है

संस्कृत के दर्शन शास्त्रो में पुरुष के स्थान पर प्रकृति को प्रमुख माना गया है। जगत की सृष्टि, स्थिति, लय क्रिया में प्रकृति ही कारण है। दूसरी ओर उसी सिद्धांत के अनुसार इस संसार में स्त्री ही माया मोह या प्रेम रज्जु से पुरुष को बांधकर संसार के सब कार्यो का कारण बनती है। सृष्टि के विकास में नारी का बहुत बड़ा उत्तरदायित्व है।

डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी ने लिखा है,पुरुष निसंग है - **स्त्री आशक्त है। पुरुष निर्द्वन्द है स्त्री द्वन्दोमुखी है। पुरुष मुक्त है स्त्री बद्ध। यथार्थ पुरुष योगी उदासिन और निर्जनवासी होता है। उसे निर्जन में रहना पसंद आता है। स्त्री पुरुष को योग से संसार की ओर उन्मुख करके कर्मशील बनाती है।**

" स्त्रियो को मन के खण्ड-खण्डो में विभम्त होना नहीं पड़ा है। वे पुरुष के समान नीचे से ऊपर तक एक अखण्ड है। इसी कारण उनके अचार व्यवहार आदि इतने मनोहर और इतने सम्पूर्ण है, किसी कारण संशय के डोले में बैठेहुए मनुष्यो कें लिए स्त्रिया मरण धुवं है। "28

नारी और समाज का अन्योन्याश्रित सम्बन्ध रहा है। नारी समाज की केन्द्र बिन्दु है। समाज कों नारी सें प्रेम, प्रेरणा, सृष्टि औरं शक्ति मिलती है,तो समाज सें नारी को प्रतिष्ठा भी और अवमानता भी।

नारी के सामाजिक मूल्यों की परख समाज और साहित्य के पल-पल परिवर्तित परिवेशो से ही हो सकती है। " शरत तो नारी हृदय के अद्‌भूत पारखी थे। उन्होने नारी बनकर नारी हृदय को पहचाना था। उसे परखा था। पतिता नारियों के प्रति उनकी सहानुभूति थी। तभी उन्हें नारी हृदय का कलाकार माना जाता है। किन्तु इतना तो निर्विवाद सत्य है,कि नारी हृदय के प्रेम और व्यथा कि कहानी जितनी सरसता और आकर्षण कें साथ नारी लिख सकती है,उतना पुरुष नहीं। नारी स्वयं नारी है। वह नारी कें हृदय में प्रवेश करके नारी कों पढ़ती है। तभी वह नारी स्वभाव का इतना सजीव चित्र प्रस्तुत करने की क्षमता रखती है। स्त्री उपन्यास लेखिकाओ कें नारी पात्रो का मूल स्वर प्रेम और वेदना है। प्रेम और वेदना दोनो का ही अद्‌भूत सामंजस्य उनके जीवन में मिलता है। नारी प्रेम का प्रतिदान नहीं मांगती यही उसकी सबसे बड़ी विशेषता है। वह सजग नयनो से अपने प्रेम को लुटते देखती है,लेकिन बोलती नहीं यही तो उसके जीवन का दिव्य वरदान है।

श्रीमती अमृता प्रितम के वाक्यों में - " औरत जब किसी से प्यार करती है,कितना प्यार करती है। ..... निरे पूरब के कालिदास की शकुन्तला ही नहीं बल्कि पश्चिम के हार्डी की टैस भी .....जब पानी के बरतन में अपने दोनो हाथ डालकर अपने प्यारे के हाथो से खेलती है और वह अपनी ऊँगलियाँ उसकी ऊँगलियों में डालकर पुछता है ..... बताओ तो तुम्हारी कितनी ऊँगलिया है,और मेरी कितनी? तो वह कहती है - सभी तुम्हारी है। "29

नारी कें सम्बन्ध में जितना भी कहा जाए बहुत कम लगता है,नारी की महानता के सम्बन्ध में कहने से हमें शब्दकोष भी अधुरा महसुस होगा। नारी को प्राय: सभी साहित्यकारों ने अपने साहित्य कि अभिव्यक्ति का साधन बनाया है। कविता, कहानी, नाटक, उपन्यास प्राय: साहित्य के सभी अंगो में नारी का विस्तृत विवरण मिलता है। सच तो यह है,कि नारी ने ही साहित्य को गति दी है,और साहित्यकार को प्रेरणा किन्तु जहाँ नारी ' साहित्य ' कि अभिव्यक्ति का साधन बनाई गई वहाँ वह स्वयं भी साहित्य रचना की ओर अग्रसर हुई। यहाँ तक की साहित्य के क्षेत्र में उसने अपने अपूर्व प्रतिभा का परिचय दिया। मध्यकाल में मीरा ने भाव प्रवण गीतों में नारी हृदय की एकांत तन्मयता का संगीत कितना मादक बन पड़ा है,यह सर्वविदित है। आधुनिक काल में महादेवी ने साहित्य में उच्च स्थान बनाकर यह सिद्ध कर दिया की नारी पुरुष से साहित्य के क्षेत्र में भी पीछे नहीं।

एक बहुत बड़े अंग्रेज विद्वान साहित्यज्ञ का मत है,कि उपन्यासों औंर नाटकों आदि में स्त्रियों कें चरित्र का जैसा अच्छा चित्रण और विकास स्त्री लेखिकाओ कें द्वारा होता है,वैसा अच्छा चित्रण औंर विकास पुरुष लेखको कें द्वारा होता है,वैसा अच्छा चित्रण औंर विकास पुरुष लेखको कें द्वारा नहीं होता। वस्तुत: इस मत की सत्यता में कोई संदेह नहीं नारी हृदय जैसा अच्छा ज्ञान एक नारी को हो सकता है,वैसा पुरुषो के लिए संभव नहीं है। आज भारतीय नारी के समक्ष देश का विस्तृत विकासोन्मुख क्षेत्र है, जीवन के अनेक ज्वलंत प्रश्न है। नारी निरंतर आगे बढ़ रही है। अपने खोये व्यक्तित्व को नारी ने पुन: प्राप्त कर लिया है,भारतीय नारी का अपना अलग ही व्यक्तित्व है,जिसकी अपनी विशेषता है। भारतीय नारी पाश्चात्य प्रलोभनो में फंसकर अपनी भारतीयता की उपेक्षा करने में रुची नहीं ले सकती,यही तो भारतीय नारी की भारतीयता है। यही उसका चरित्र है। जो अद्‌भूत है,किन्तु मोहक है।

नारी चरित्र की विशेषताएँ

"नारी ! तुम केवल श्रद्धा हो विश्वास रजत नग-पग तल में ;
पियुष स्त्रोत - सी बहा करो जीवन के सुन्दर समतल में।"

इससे बड़ी और विशेषता हम क्या कहें कितने सुन्दर शब्दों में जयशंकर प्रसाद ने नारी कों अनमोल स्थान दे दिया। नारी की विशेषता कें सम्बन्ध में हम अगर चर्चा करें तो शायद उसकें समक्ष शब्द भी छोटे महसुस होंगे। संक्षेप में हम इतना भी कह दे की नारी महान है। बस उसे और कोई शब्दो से आभूषित ना करें तो भी वह इन छ: शब्दो मे अपनी विशेषताओं को पूर्णता प्रदान करती है। यद्यपि मूल प्रवृत्तियाँ जन्म जात होती है , किन्तु किसी व्यक्ति में कौन सी वृत्ति प्रधान होगी,यह उसके वातावरण पर निर्भर करता है। प्राय: यह देखा जाता है,कि नारी में प्रेम औंर सन्तति पालन की वृत्तियाँ अधिक होती है। नारी का अधिकांश समय परिवार और संतान के बीच व्यतित होता है। मूलत: पति और संतान ही उसका केन्द्र होते है। गर्ग जी तो नारी कें समाज सेविका अथवा क्रांतिकारी रुप में भी उसके ममत्व की व्यापकता कें दर्शन करवाऐं है। नारी ने आत्मसम्मान की भावना भी हम गर्गजी के सम्पूर्ण उपन्यास में पाते है। परन्तु नारी को आत्मसम्मान की भावना अवश्य आई,किन्तु वह उसके महत्व को पराजित नहीं कर सके। नारी की महानता के दर्शन करवाऐं है। नारी में आत्मसम्मान की भावना भी हम गर्गजी के सम्पूर्ण उपन्यास में पाते है,परन्तु नारी को आत्मसम्मान की भावना अवश्य आई,किन्तु वह उनके ममत्व को पराजित नहीं कर सकी। नारी की महानता के दर्शन तो हम आजकल आँख खोलते ही समाचार-पत्रो, दूरदर्शन, रेडियो जैसे कई माध्यम में हम पढ़ते है। नारी सर्वगुण सम्पन्नता को उजागर करती है,यही उसकी महानता, सर्वगुण होने की विशेषता है,एक पुरुष को चलते राह से भटकने में मजबूर कर देती और भटकते इंसान को एक सही रास्ता दिखाती है,प्रगति की ओर बढ़ाती है। नारी सचमुच महान है। "नारी चरित्र को जानने से हमे उनके स्वरुप को उनकी प्रवृति, व्यवहार, भावना संवेदना और व्यक्तिगत रुचिमूलकता सें पहचानने की चेष्ठायें हमेशा चलती रहेगी और दूसरी और मनुष्यकाल सन्दर्भ में निरन्तर अपने को परिवर्तित और परिभाषित करता रहेगा। चरित्रो को हम दो वर्गो में विभाजित कर सकते है।

(1) अन्तर्मुख (2) बर्हिमुख

लेकिन कुछ को बर्हिमुख व कुछ को अन्तर्मुख कह कर काम चलाया जा सकता है। जिन्हें बर्हिमुख कहा जाएगा,क्या उनमें किसी प्रकार का आंतरिक संसज्जन नहीं होगा ? इसी प्रकार जिन्हें हम अन्तर्मुख चरित्र कहेंगे,उनमें परिवेशगत संसज्जन नहीं होगा ? नहीं सच तो यह है,कि चरित्रों का वर्ग नहीं होता। वे या तो चरित्र होते है या फिर कुछ नहीं होते है। लेकिन इन सब बातों के साथ-साथ साहित्य में नारी चरित्र की तीन कोटियाँ मानी जा सकती है।

(1) अन्तर्मुख (क) आभ्यन्तर संशिलष्ट

(ख) आत्मविभाजीत

(ग) आत्म निर्वासित

(2) मनोविश्लेषणपरक

(3) असामान्य

(1) <u>आभ्यन्तर संशिलष्ट</u> - "आभ्यन्तर संशिलष्ट चरित्रों से तात्पर्य हम ऐसे व्यक्ति अथवा वर्ग से लेते है। जिनका जीवन बाहर और भीतर किसी भी प्रकार से आहत नहीं है। सामाजिक जीवन और मूल्यों के साथ इनकी स्वीकृति कुछ इस प्रकार की होती है,कि जिसमें सामाजिक सह अस्तित्व में बांधा नहीं पड़ती। यो तो महाकाव्य के अधिकांश कथानायक अथवा चरित्र इसी अर्थ में आभ्यान्तर संशिलष्ट थे,कि वे जिस समाज के अंग थे,उसके मूल्यों को प्रतिफल करने की अवस्था में उनका अपना व्यवहार संयोजित था, किन्तु उपन्यासो में आकर यह समस्या कुछ जटिल हो गई ऐसे संशिलष्ट चरित्रो के निर्माण के लिए यह आवश्यक था,कि सामान्य जीवन से उनका विरोध न हो संक्षेप में इस चरित्र की निम्न लिखित विशेषताएँ -

1. आभ्यन्तर संशिलष्ट चरित्र सामाजिक अन्तर्विरोधो तथा तनावो के भीतर भी अपने को सामाज बाह्त अथवा असामाजिक नहीं समझते। एक प्रकार से सेतुवासी चरित्र होते है। वे अपने समाज को निरंतर भविष्यत समाज सें जोड़ने की दशा में प्रयत्नशील होते है।

2. आभ्यन्तर संशिलष्ट चरित्रों की पहचान केवल सामाजिक अभियोजन नहीं है,बल्कि शील स्वभाव से उनका अखण्ड होना भी है।

सामाजिक विरोध उनके अपने व्यवहारो कों विभाजीत नहीं करते। इसलिए मूल्यों अथवा आदर्शो के स्तर पर अपने समाज से उनकी टकराहटे हो सकती है, किन्तु उनके अपने आचार आदर्श में सामान्यत: विरोध नहीं हो पाता।

3. ऐसे आभ्यन्तर संशिलष्ट चरित्र आधुनिक समाज में विद्रोही चरित्र हो सकते है। चाहे वह गाँधीवादी अर्थो में विद्रोही हो या मार्क्सवादी अर्थो में विद्रोही हो या तुर्कनेव के निहिलिस्ट अर्थो में विद्रोही हो।

4. ऐसे आभ्यन्तर संशिलष्ट चरित्रो का भम्तृत्व ही उस बात का प्रमाण होता है,कि वे केवल बाहर से ही संशिलष्ट था अखंड नहीं है बल्कि अपने भीतर भी अखंड बने रहने की उनमें क्षमता है।"30

मृदुलागर्ग के उपन्यास 'उसके हिस्से की धुप' की मनीषा के व्यक्तित्व में अर्न्तमुखी संलिष्ट भावना दिख पड़ती है। कथन और आचरण की विषमता एवं धार्मिकता उसके चरित्र के दो बाह्य पक्ष है। ये दोनो ही प्रवृतियाँ अभुक्ति की प्रतिक्रिया है। इच्छा विपरीत पति के अभिरुप आचरण करने के कारण उसमें उपर्युक्त विषमता या रहस्यवादिता आ गई है।

दामपत्य जीवन की विफलता से उत्पन्न अपने स्वभावगत विषमता को मिटाने में अपने जीव को भोग विलास बना बैठती है।

(2) <u>आत्मविभाजीत नारी चरित्र</u>- "आत्मविभाजीत चरित्रों में सामाजिक मूल्यों और सामाजिक व्यवहारो के अन्तर्विरोधो के कारण, द्वन्दात्मक प्रवृति की प्रधानता हो जाती है। ऐसे पात्र अपनी द्वन्दात्मक सत्ता का विनाश नहीं चाहते बल्कि इसके बीच भी अपनी निजता बनाये रखते है। अर्थात उनमें सामंजस्य की प्रवृति का अभाव होता है। द्वन्दो की अधिकता के कारण चरित्रो का विघटन भी होने लगता है।

और अन्तत: ये अपनी इच्छाओ को ही सर्वोपरि मान लेते है। ये पात्र अंहवादी स्वभाव के होते है,तथा अपनी अहंवादिता के समक्ष सामाजिक जीवन मूल्यो को तुच्छ मानते है। ऐसे चरित्रो के जीवन में और साहित्य में एक ऐतिहासिक महत्व है।

संक्षेप इस चरित्र की निम्नलिखित विशेषताएँ है -

1. चरित्र के आत्मविभाजन से यह अर्थ नहीं लिया जाना चाहिये कि उसकी चेतना के खण्ड हो जाते है। वस्तुत: आत्मविभाजन से तात्पर्य व्यक्तित्व के विभाजन से है। किसी भी पागल के व्यक्तित्व को, अगर हम उसके विक्षेप पूर्व व्यक्तित्व से तुलना करे तो हमें पता चलेगा कि पागल की चेतना में वह सेतु टूट गया होता है। जो इन दोनो व्यक्तियो को जोड़ पाता है। किन्तु आत्मविभाजित चरित्र में दो व्यक्तित्व इस प्रकार पृथक नहीं होते फिर भी उनकी प्रेरणाएँ पृथक होती है। यह विरोध उनके शीलस्वभाव को खंडित करता है।

2. इस प्रकार के चरित्रों की दूसरी विशेषता है,कि उनके आदर्श और व्यवहार में किसी प्रकार की संगति नही होती है। वे हिप्पोक्राइट्स हो सकते है। मान्यत शीलहत अपराधी भी। ऐसे चरित्र के लिए यह आत्मविरोध स्वयं भी एक पीड़ास्पद अनुभव है।

3. आत्मविभाजीत चरित्रों का एक रुप उन देहभोगवादी नारियों का है जो "पानी बिच मीन पियासी" की तरह प्रत्येक पुरुष के सम्पर्क में आकर भी अपनी तृप्ति का आधार प्राप्त नहीं कर पाती है। और वे नारी के सहज-सामाजिक व्यक्तित्व से टूटकर अराजक हो जाती है "31

माधवी आत्म विभाजित नारी पात्रो में एक है। उसके जीवन की असहजता परिस्थितियाँ ही विषमता की उपज है। वह एक शिक्षित समझदार व एक पतिव्रता नारी है। ऐसे पात्रो के इस व्यवहार का मूल कारण उनका विभाजीत व्यक्तित्व है।

(3) **<u>आत्मनिर्वासित नारी चरित्र</u>** - आत्मनिर्वासित नारी चरित्र के अन्तर्गत सम्पूर्ण जीवन तंत्र के भीतर व्यक्ति पहले समाज से और फिर अपने आप से निर्वासित हुआ अनुभव करता है। ऐसी में पृथकता की दो स्पष्ट स्थितियाँ दिख पड़ती है। पहली स्थिति सामाजिक निर्वासन की और दूसरी आत्म निर्वासन की है। इन दोनो ही स्थितियो में व्यक्ति निर्वासित हो जाता है। इसमे समाज और व्यक्ति के बीच का सेतु ही समाप्त हो जाता है। व्यक्ति समाज से विलग होकर क्रमश:अपने से भी विलग हो जाता है। व्यक्ति को अपने जीवन के प्रति गहरा लगाव नहीं रह जाता , वह परिस्थितियो की इच्छा पर अपने जीवन को छोड़ देता है। हिन्दी कथा साहित्य में आत्मनिर्वासित पात्रो की संख्या कम ही है।

संक्षेप में इस प्रकार कह सकते है।

1. आत्मनिर्वासन सामाजिक निर्वासन की तरह कोई मूर्त स्थिति नहीं है। यह सार्वभौम के विरुद्ध व्यक्ति का विद्रोह है,जिसमें केवल समाज से ही व्यक्ति का विलगाव नहीं होता, अपनी चेतना से भी वह बहिष्कृत हो जाता है।

2. आत्म निर्वासन विवेक का स्वर है। पहले व्यक्ति वर्तमान परिस्थितियो में अपनी पूर्णता ढूंढता है।3. आत्मनिर्वासन वस्तुस्थितियो के विरोध का भी परिणाम है,और व्यक्तिके मानसिक संस्कारो के विरोध का भी।

श्यामा एक आत्मपीड़क नारी है। आत्मपीड़ा के द्वारा आत्मतुष्टि लब्ध करना उसकी स्वभावगत विशेषता है।

(2) **<u>मनोविश्लेषणवादी नारी पात्र</u>** - "मनोविश्लेषणवादी नारी पात्र वे पात्र कहलाते जिनके मन में जिनके मस्तिष्क में हमेशा एक द्वन्द चलता रहता है। जो कोई भी निर्णय लेने में अक्षम पाती है,हमेशा,मानसिक रोगो से पीड़ित पात्र आते है। फ्रायडीन भाषा में अचेतन की प्रेरणा से जीवन प्रेरित होता है। अचेतन की प्रेरणा अज्ञात रहती है। व्यक्ति जल्दी यह नही समझ पाता है कि उसके जीवन में अवांछित परिवर्तन क्यों होते है? वह हमेशा उलझनो से घिरा हुआ पाता है।"32

मनु का चरित्र सांकेतिक है। अहमवादी मनु जटिल स्वभाव की नारी है। वह पारिवारिक नैतिकता को अपनी व्यक्तिगत इच्छाओ से तुच्छ समझती है। वो सिर्फ भोगना जानती है।

(3) **<u>असामान्य</u>** - "असामान्य क जीवन की अपनी और अन्तरंग परिस्थितियाँ होती है। इसके अतिरिक्त व्यक्ति के स्वरुप की दृष्टि से भी भिन्नता होती है,यह भिन्नता संवेदना और उसके प्रेरको की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। उनके आवेग और उन आवेगो को उद्दीपक प्रेरणाएं भी भिन्न प्रकार की होती है। बल्कि भावना के भोग की दृष्टि से भी व्यक्ति पृथक होता है।"33

संगीता एक असामान्य चरित्र की विशेषता रखती है। जो एक सफल प्रेमिका के रुप में उभरी है।

निष्कर्ष के तौर पर हम इतना ही कहेंगे कि नारी ईश्वर की अद्‌भूत कृति है। हर नारी का अपना स्वभाव होता है। अपनी अलग एक पहचान होती है। उसका अपना व्यक्तित्व होता है,और उसके इसी स्वभाव की पहचान को, व्यक्तित्व को हम विभिन्न वर्गो में रखकर उसे जान सकते है एवं उसकी असली पहचान को समझ सकते है।